तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

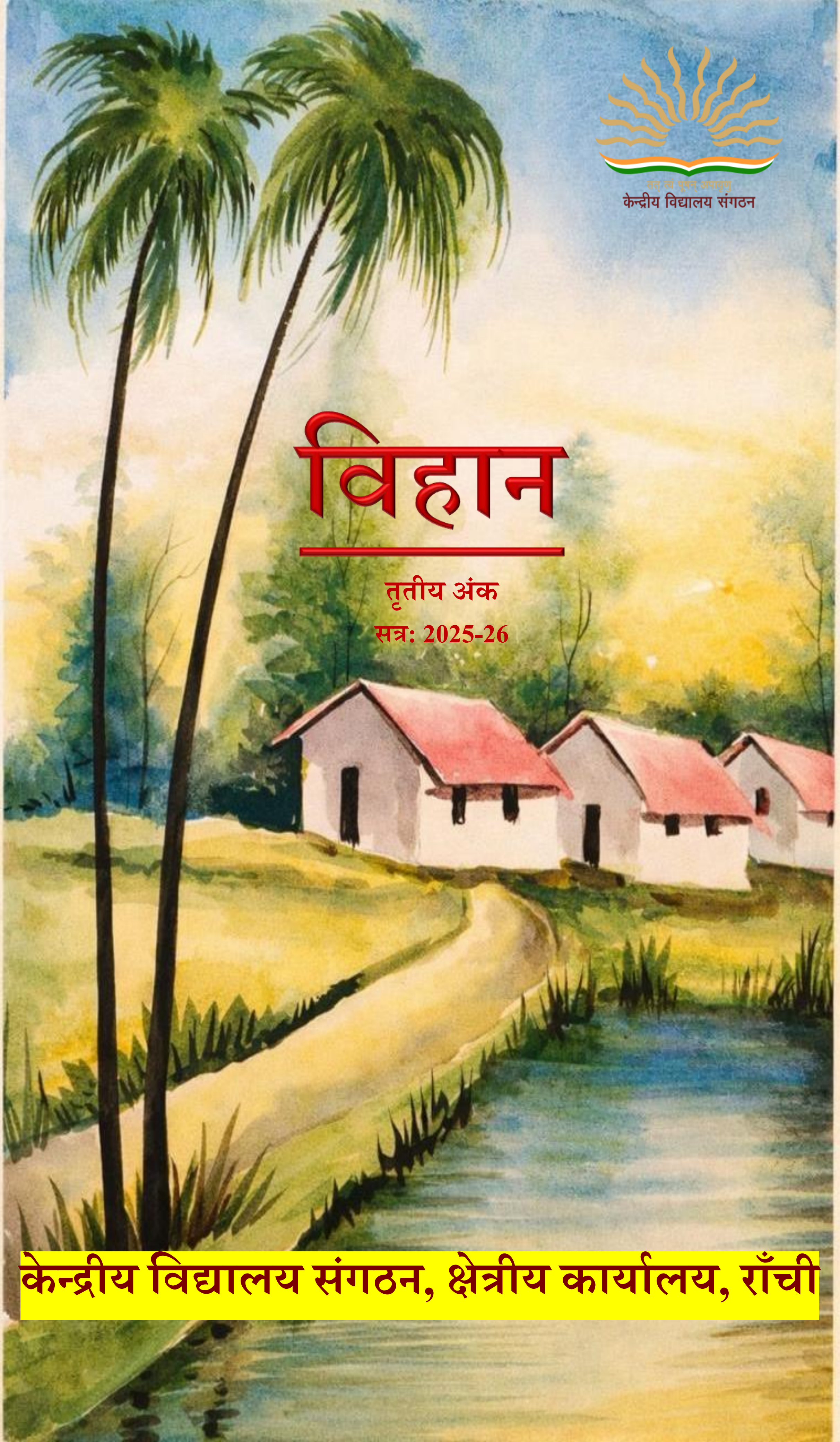

विहान

तृतीय अंक

सत्र: 2025-26

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय, राँची

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

हमारे संरक्षक

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

मुख्य संरक्षक

श्री विकास गुप्ता, भा. प्र. से.
आयुक्त
केंद्रीय विद्यालय संगठन
मुख्यालय, नई-दिल्ली

श्री दीपेश गहलोत
अपर आयुक्त (प्रशासन)
के. वि. सं. (मु.), नई-दिल्ली

सुश्री चंदना मंडल
अपर आयुक्त (शैक्षिक)
के. वि. सं. (मु.), नई-दिल्ली

श्री सत्य नारायण गुलिया
संयुक्त आयुक्त (वित्त)
के. वि. सं. (मु.), नई-दिल्ली

श्री सोमित श्रीवास्तव
संयुक्त आयुक्त (शैक्षिक)
के. वि. सं. (मु.), नई-दिल्ली

श्री नगेंद्र गोयल
संयुक्त आयुक्त (कार्मिक)
के. वि. सं. (मु.), नई-दिल्ली

सुश्री नीलम
संयुक्त आयुक्त (प्रशासन)
के. वि. सं. (मु.), नई-दिल्ली

सुश्री पी बी एस उषा
संयुक्त आयुक्त (प्रशिक्षण)
के. वि. सं. (मु.), नई-दिल्ली

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

सह - संरक्षक

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

श्री एस. वी. जोगलेकर
उपायुक्त
के.वि.सं. राँची संभाग

श्री सुरेश सिंह
सहायक आयुक्त
के.वि.सं. राँची संभाग

श्रीमती सुजाता मिश्र
सहायक आयुक्त
के.वि.सं. राँची संभाग

श्री बलेन्द्र कुमार
सहायक आयुक्त
के.वि.सं. राँची संभाग

संपादक

श्री योगेन्द्र कुमार
स्नातकोत्तर शिक्षक हिन्दी
के. वि. टाटानगर

डॉ. नीरज कुमार
स्नातकोत्तर शिक्षक हिन्दी
के. वि. नामकुम

श्री चिंतामणि सिंह
स्नातकोत्तर शिक्षक हिन्दी
के. वि. बोकारो क्रमांक - 1

डॉ. प्रियंका सिंह
हिन्दी अनुवादक
के.वि.सं., क्षे. का., राँची

आवरण पृष्ठ एवं तकनीकी सहायक

श्री सजित कुमार मिंज
स्ना. प्र. शि. कला
के. वि. हिनू प्रथम पाली

श्री हेमंत शर्मा
स्ना. प्र. शि. संस्कृत
के. वि. गढ़वा

नोट: पत्रिका में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं तथा संपादक मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक के मोती...

शिक्षा से संस्कार तक : गतिविधियों की झाँकी	
अंतर्वस्तु	पृष्ठ
संभाग के केन्द्रीय विद्यालयों की उपलब्धियों एवं गतिविधियों की एक झलक	7 - 11

क्रम संख्या	अंतर्वस्तु	लेखक	पृष्ठ संख्या
1	कल्पना की विवशता	डॉ. नीरज कुमार, के. वि. नामकुम	12
2	रोते रोते कहती थी	डी. के. दास, के.वि. पतरातू	13
3	बेटी हूँ न	मणिकांत पाण्डेय 'वैरागी", के.वि. बोकारो न.01	14
4	खानपान की बात करें तो	जितेन्द्र कुमार, के. वि. गुमला	15
5	२० पैसे की भैस	दयाल साव, के. वि. भुरकुंडा	16-17
6	दोस्ती	समक्ष कुमार, के. वि. नामकुम	18
7	आसमान	रिया, के. वि. पतरातू	19
8	शिक्षक और विद्यार्थी	नीलम शर्मा, के.वि. धनबाद	20
9	मातृभूमि	मनस्वी मेहता, केंद्रीय विद्यालय नं 1 एच ई सी राँची	21
10	क्या कहती है कविता	विद्यासागर आर्य, केन्द्रीय विद्यालय गोमोह	22
11	मेरी माँ	मुक्तेश, केन्द्रीय विद्यालय मैथन डैम	23
12	बिहू	नीलम सैनी, केन्द्रीय विद्यालय मैथन डैम	24
13	भजन	सौरव कुमार, केन्द्रीय विद्यालय पलामू	25
14	प्रकृति	कोमल राणा, केन्द्रीय विद्यालय गिरिडीह	26

इस अंक के मोती...

क्रम संख्या	अंतर्वस्तु	लेखक	पृष्ठ संख्या
15	माँ की इच्छा	रश्मि रानी , केंद्रीय विद्यालय मैथेन डैम	**27**
16	पथभ्रष्ट	प्रज्ञा राय, केंद्रीय विद्यालय क्रमांक-1 बोकारो	**28**
17	कोणार्क : जहाँ समय पत्थरों में धड़कता है	कुमार आदर्श, केंद्रीय विद्यालय मैथन डैम	**29-31**
18	अम्मा	चिंतामणि सिंह, केंद्रीय विद्यालय क्रमांक -1 बोकारो	**32**
19	यात्रा-वृत्तांत : जिज्ञासा और खोज का एक दिन	द्रक्षा बानो, केन्द्रीय विद्यालय मैथन डैम	**33-34**
20	श्रेष्ठता की जंग में मानव और एआई	शशि कुमार रमानी, केन्द्रीय विद्यालय मैथन डैम	**35**
21	पैसे का सम्मान	आस्तिक शर्मा, पीएमश्री केंद्रीय विद्यालय नामकुम राँची	**36**
22	बस चलते ही जाना है	संगीता दत्ता, केन्द्रीय विद्यालय न.-1 धनबाद	**37**
23	तितली	अयान आलम, केंद्रीय विद्यालय भुरकुंडा	**38**
24	सच्ची पढ़ाई	आरूषी कुमारी सिन्हा, पीएमश्री केंद्रीय विद्यालय नामकुम राँची	**39**
25	सपनों की उड़ान	आराध्या कुमारी, केन्द्रीय विद्यालय भुरकुंडा	**40**
26	जल की पुकार	रिद्धी , केन्द्रीय विद्यालय गढ़वा	**41**
27	क्या नारी शक्ति है?	स्नेहा कुमारी, के वि मैथन डैम	42
28	हे विशाल हृदय! हे पिता!	कुमार बालशिव, पी एम श्री केंद्रीय विद्यालय सी. सु. ब. हजारीबाग	43
29	माँ तुझसे हरदम कहता हूँ	नरेंद्र जयसवाल, पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय सिमडेगा	44
30	जो आप देख पाते	संचित कुमारी, केंद्रीय विद्यालय मैथन डैम	45-47
31	वसंत ऋतु	अक्षिता राउत राय, के वि मेघाहातुबुरू	48

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि केन्द्रीय विद्यालय संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय, राँची द्वारा विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं जनसामान्य में सृजनात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने तथा विद्यालयों की उल्लेखनीय गतिविधियों को व्यापक समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से गृह पत्रिका 'विहान' का नवीन अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 समावेशी, गुणवत्तापूर्ण एवं कौशल-आधारित शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि सृजनशील, संवेदनशील एवं उत्तरदायी नागरिकों का निर्माण है। इसी दृष्टि से राँची संभाग के विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्ति प्रदान करने वाला यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है।

राजभाषा के प्रभावी क्रियान्वयन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित अनुवाद उपकरण 'कंठस्थ-2.0' तथा व्यापक हिन्दी शब्दकोश 'हिन्दी शब्द सिंधु' के प्रयोग द्वारा राँची संभाग ने हिन्दी के तकनीकी सशक्तीकरण की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया है। अधिकांश विद्यालयों द्वारा निर्धारित हिन्दी पत्राचार लक्ष्यों की प्राप्ति भी प्रशंसनीय है।

'विहान' के इस अंक में शैक्षिक, सांस्कृतिक, खेल, विज्ञान एवं कला गतिविधियों के साथ-साथ युवा संसद, परीक्षा पे चर्चा, एक भारत श्रेष्ठ भारत, AI-विद्यासेतु 1.0, वीरगाथा 5.0, मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता तथा अन्य अनेक महत्त्वपूर्ण आयोजनों की सारगर्भित झलक प्रस्तुत की गई है, जो विद्यार्थियों के बहुआयामी विकास को प्रतिबिम्बित करती है।

मुझे विश्वास है कि 'विहान' का यह अंक पाठकों के लिए प्रेरणास्रोत सिद्ध होगा तथा राँची संभाग की उपलब्धियों और नवाचारों को नई पहचान प्रदान करेगा। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मैं सम्पादक मंडल एवं सभी रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

अनेक मंगल कामनाओं सहित।

(विकास गुप्ता)
आयुक्त
केंद्रीय विद्यालय संगठन (मुख्यालय)
नई दिल्ली

संदेश

सुधी पाठको,

मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है कि केंद्रीय विद्यालय संगठन,रांची संभाग, विहान पत्रिका का तृतीय अंक प्रकाशित करने जा रहा हैI

'विहान', अपने नाम के अनुरूप नवचेतना, नव विचार एवं नवीन संभावनाओं का प्रतीक बनकर उभरी हैI राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों के अनुरूप, रांची संभाग के विद्यालय द्वारा किए जा रहे शैक्षणिक, सह-शैक्षणिक, सांस्कृतिक मूल्य परक प्रयासों एवं विद्यार्थियों की अर्जित उपलब्धियों की झलक इस संस्करण में परिलक्षित होती है, जो विद्यार्थियों को सकारात्मक रूप से आगे बढ़ाने में सहायक होगी।

'विहान' पत्रिका में शिक्षकों, सहकर्मियों एवं विद्यार्थियों ने समाज के विभिन्न मुद्दों पर अपनी गहरी दृष्टि एवं कल्पना की तस्वीर साझा की है, जो पाठकों को आत्म मंथन हेतु प्रेरित करती है एवं सामाजिक दायित्व के प्रति सजग भी बनाती है I जब एक नवोदित रचनाकार अपने कोमल सृजन को प्रकाशित देखता है, तो प्रसन्नता से गदगद हो झूम उठता है जो उसकी अंतर्निहित प्रतिभा को ऊर्जा, उमंग एवं सकारात्मक प्रेरणा से भर देता और वहीं से जन्म लेता है एक नया रचनाकार I

'विहान' पत्रिका विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा को अभिव्यक्त करने का सुनहरा मंच प्रदान कर रही है I पत्रिका के लेख, कविताएं, चित्र, अनुभव, उपलब्धियां यह दिखाती हैं कि रांची संभाग के विद्यार्थी जिज्ञासु, सृजनशील, परिश्रमी एवं आत्मविश्वासी हैंI आप केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं बल्कि प्रत्येक क्षेत्र में सीखते हुए आगे बढ़ने का हौसला रखते हैं | यही राष्ट्रीय शिक्षा नीति की मूल भावना भी है कि प्रत्येक विद्यार्थी को संवेदनशील, जागरूक और जिम्मेदार नागरिक बनाने का हर संभव प्रयास किया जाए। इस कार्य में हमारे केंद्रीय विद्यालय संगठन के शिक्षक प्रतिबद्ध हैं I मुझे पूर्ण विश्वास कि यह सराहनीय प्रयास पाठकों को प्रेरित करेगा और सीखने- सिखाने की प्रक्रिया को सशक्त बनाएगा I

इस उत्कृष्ट प्रयास के लिए मैं पत्रिका से जुड़े सभी सदस्यों एवं विशेष रूप से रांची संभाग के विद्यार्थियों को हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई देती हूँ और आशा करती हूं कि "विहान" पत्रिका भविष्य में भी ज्ञान, प्रेरणा एवं सकारात्मक सोच के प्रकाश को फैलाती रहेगी I

शुभाशीष!

(चंदना मंडल)
अपर आयुक्त (शैक्षिक)
केन्द्रीय विद्यालय संगठन (मुख्यालय)
नई दिल्ली

संदेश

सुधी पाठको,

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, रांची संभाग की गृह पत्रिका 'विहान' के तृतीय अंक में आपका स्वागत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। किसी संस्थान की गृह पत्रिका वर्ष भर के गतिविधियों का प्रतिबिम्ब होती है। उपलब्धियों, कौशल तथा प्रतिभाओं को प्रदर्शित करने का खुला मंच प्रदान करती है। आधुनिक प्रौद्योगिकी के युग में संवेदनाओं को प्रस्फुटित करने का यह प्रयास सराहनीय है। आत्माभिव्यक्ति की यह परम्परा विद्यार्थियों, शैक्षिक एवं गैर-शैक्षिक वृंद में अपने समाज एवं उसकी परिस्थितियों को गहराई के साथ चिंतन-मनन करने का अवसर प्रदान कर रही है जिसका परिणाम दूरगामी प्रतीत हो रहा है।

रांची संभाग के उपायुक्त, उनके सहयोगी सहायक आयुक्त, प्राचार्य एवं संभाग के सभी शैक्षिक और गैर-शैक्षिक कर्मी, सुधी पाठक और सबसे महत्त्वपूर्ण कड़ी विद्यार्थी बधाई के पात्र हैं। अभिलाषा है कि पत्रिका का अनवरत प्रकाशन हो, विद्यार्थियों के सुषुप्त सकारात्मक विचारों को व्यक्त करने हेतु प्रोत्साहन मिले एवं समाज के प्रासंगिक विषयों को पत्रिका के माध्यम से विचारणीय बनाया जाए।

विहान पत्रिका के तृतीय अंक के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ!

22/01/2026

(सुश्री नीलम)
संयुक्त आयुक्त (प्रशासन)
केंद्रीय विद्यालय संगठन, मुख्यालय
नई दिल्ली

संदेश

केंद्रीय विद्यालय संगठन, राँची संभाग द्वारा 'विहान' पत्रिका के तृतीय अंक का प्रकाशन अत्यंत हर्ष एवं गौरव का विषय है।

यह पत्रिका मात्र एक प्रकाशन न होकर, हमारे विद्यार्थियों, शिक्षकों और समस्त कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा, बहुमुखी अभिरुचि तथा दूरदर्शी सृजनशीलता का एक उत्कृष्ट समन्वय प्रस्तुत करती है। यह केंद्रीय विद्यालय संगठन के शैक्षणिक और सांस्कृतिक परिवेश का जीवंत प्रतिबिंब है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस अंक में संकलित विविध और सारगर्भित रचनाएँ सभी पाठकों को न केवल प्रेरणा प्रदान करेंगी, अपितु ज्ञान-विस्तार, नवाचार और सकारात्मक चिंतन को भी समुचित रूप से प्रोत्साहित करेंगी। यह साझा साहित्यिक सहभागिता विद्यालयों में आपसी सहयोग, प्रभावी संवाद और रचनात्मक अकादमिक वातावरण को और अधिक सुदृढ़ तथा सशक्त बनाएगी।

मैं 'विहान' पत्रिका की सम्पादकीय टीम, सभी माननीय योगदानकर्ताओं और राँची संभाग के समर्पित शिक्षक-समुदाय एवं मेधावी विद्यार्थियों को इस प्रशंसनीय और सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं मंगलमय शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(एस. वी. जोगलेकर)
उपायुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन, राँची संभाग

संदेश

किसी भी समाज की सृजनात्मक चेतना उसके भावी नागरिकों की सोच, संवेदना और अभिव्यक्ति में प्रतिबिंबित होती है। विद्यार्थियों की रचनात्मकता केवल एक प्रतिभा नहीं, बल्कि एक ऐसी शक्ति है जो उनके व्यक्तित्व को आकार देती है और उन्हें विचारशील तथा संवेदनशील नागरिक के रूप में विकसित करती है। विद्यालयों की रचनात्मकता और उपलब्धियों से युक्त संभाग स्तर पर प्रकाशित होने वाली पत्रिकाएँ इस चेतना को दिशा देने का एक सशक्त माध्यम होती हैं।

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि हमारे विद्यालयों के विद्यार्थी साहित्य, कला एवं चिंतन के विविध आयामों में निरंतर प्रगति कर रहे हैं और अपनी मौलिक अभिव्यक्तियों के माध्यम से शिक्षा को जीवंत स्वरूप प्रदान कर रहे हैं। विद्यार्थियों की रचनाएँ उनके अंतर्मन की आवाज़ होती हैं, जिनमें उनके सपने, अनुभव और दृष्टिकोण समाहित होते हैं। ऐसी पत्रिकाएँ उन्हें आत्म-अभिव्यक्ति के मंच के साथ-साथ आत्म-मूल्यांकन और आत्म-विकास का अवसर भी प्रदान करती हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह ई-पत्रिका विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता को और अधिक विस्तार देगी तथा उन्हें नवाचार, कल्पना और विचार की नई दिशाओं में अग्रसर करेगी। यह प्रयास निश्चय ही शिक्षा को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रखकर उसे जीवन से जोड़ने का कार्य करेगा।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, राँची संभाग की ई-पत्रिका 'विहान' के इस तृतीय अंक के सफल प्रकाशन के लिए मैं संपादकीय समिति, समस्त शिक्षकगण एवं सभी सहभागी विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रदान करता हूँ।

आशा है कि यह रचनात्मक यात्रा भविष्य में भी इसी ऊर्जा और उत्साह के साथ निरंतर आगे बढ़ती रहेगी।

मेरी शुभकामनाएँ !

(सुरेश सिंह)
सहायक आयुक्त सह राजभाषा अधिकारी
केन्द्रीय विद्यालय संगठन, राँची संभाग

प्रधान सम्पादक की कलम से ...

महान गर्व एवं प्रसन्नता की बात है कि केन्द्रीय विद्यालय संगठन,राँची संभाग द्वारा ई-गृह पत्रिका 'विहान' का तृतीय अंक प्रकाशित किया जा रहा है | पत्रिका का उद्देश्य ही है पाठकों को जानकारी देना, उनका मनोरंजन करना और किसी विशेष विषय एवं दृष्टिकोण के प्रति जागरूक करना | जैसा कि मैथिली शरण गुप्त जी की निम्न पंक्तियों में यह भाव व्यंजित होता है:

"केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए |
उसमे उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए" ||

निश्चित रूप से इस नवीन संस्करण में हमारे संभाग के विद्यार्थियों की रचनात्मक सोंच एवं कल्पनाशीलता एवं शिक्षक-शिक्षिकाओं की प्रतिभा एवं नवोन्मेष कौशल परिलक्षित होंगे| इसके साथ ही नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत होनेवाली गतिविधियों की झलक दिखाई देगी| केन्द्रीय विद्यालय संगठन द्वारा निर्दिष्ट गैर-शैक्षणिक विभिन्न क्रिया- कलापों, आयोजनों, महत्त्वपूर्ण दिवसों इत्यादि कार्यक्रमों की उपलब्धियों की जानकारी प्राप्त होगी | हम अपने विद्यार्थियों, शिक्षक-शिक्षिकाओं को उनके रचनात्मक प्रयासों के लिए आभार प्रकट करते हैं|

'विहान' पत्रिका के तृतीय अंक के प्रकाशन हेतु इस संभाग के सभी लोगों ने अपनी रचनाएँ भेजकर महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है| राँची संभाग की अनेक महत्त्वपूर्ण गतिविधियों एवं उपलब्धियों के साथ-साथ ज्ञानवर्द्धक जानकारी पत्रिका के माध्यम से अधिकतम लोगों तक पहुँचाना आसान होता है| यह संभाग का एक उपयोगी एवं संकलित दस्तावेज भी है|

मैं अपने केन्द्रीय विद्यालय संगठन,राँची संभाग के कर्मठ, यशस्वी एवं प्रेरणावान उपायुक्त श्री समाज वी. जोगलेकर जी तथा उनके सभी सहयोगी सहायक आयुक्त श्री सुरेश सिंह, श्री बलेन्द्र कुमार एवं श्रीमती सुजाता मिश्र के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ जिन्होंने पत्रिका प्रकाशन का यह श्रेष्ठ कार्यभार ग्रहण करने योग्य समझा |

अपने सभी सहयोगी श्री चिंतामणि सिंह स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी) पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय बोकारो क्रमांक 1, डॉ. नीरज कुमार स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी) पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय नामकुम, श्री सजित मिंज प्र.स्नातक शिक्षक(कला), केन्द्रीय विद्यालय हिनू प्रथम पाली, श्री अभिषेक कुमार तकनीकी सहायक केन्द्रीय विद्यालय पलामू एवं सुश्री प्रियंका सिंह हिन्दी अनुवादक क्षेत्रीय कार्यालय, राँची संभाग के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिन्होंने हर कदम पर प्रत्येक प्रकार से सहायता प्रदान कर इस पत्रिका को प्रकाशन योग्य बनाया |

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के आयुक्त महोदय श्री विकास गुप्ता एवं संयुक्त आयुक्त (व्यक्तिगत) श्री सोमित श्रीवास्तव के प्रेरणादायी तथा वैचारिक रूप से आंदोलित करनेवाले सन्देश तथा मार्गदर्शन हेतु उन्हें सम्पूर्ण राँची संभाग की ओर से अपने अंतर्मन से कोटिशः धन्यवाद !

'विहान' पत्रिका के उद्देश्यपूर्ण सफल एवं उत्कृष्ट प्रकाशन के लिए आप सभी सुधी पाठकों को भी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ !

(श्री योगेन्द्र कुमार)
स्नातकोत्तर शिक्षक हिन्दी
के. वि. टाटानगर

हिन्दी पखवाड़ा

हिंदी पखवाड़ा केंद्रीय विद्यालय संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय रांची के अंतर्गत सभी विद्यालयों में बड़े उत्साह और सहभागिता के साथ मनाया गया। इस आयोजन का उद्देश्य विद्यार्थियों, शिक्षकों और समस्त विद्यालय समुदाय में **हिंदी भाषा के प्रति जागरूकता, सम्मान एवं प्रयोग** को बढ़ावा देना होता है। पखवाड़े के दौरान विभिन्न **साहित्यिक, भाषाई व सांस्कृतिक गतिविधियों** के माध्यम से हिंदी की समृद्ध परंपरा, उसके व्यावहारिक महत्व तथा राष्ट्र की एकता में उसके योगदान को रेखांकित किया गया। यह आयोजन भाषा के प्रति प्रेम जगाने के साथ-साथ **सृजनात्मकता और अभिव्यक्ति कौशल** को विकसित करने का एक प्रभावी माध्यम सिद्ध हुआ।

समूह गायन – के. वि. मैथन डैम

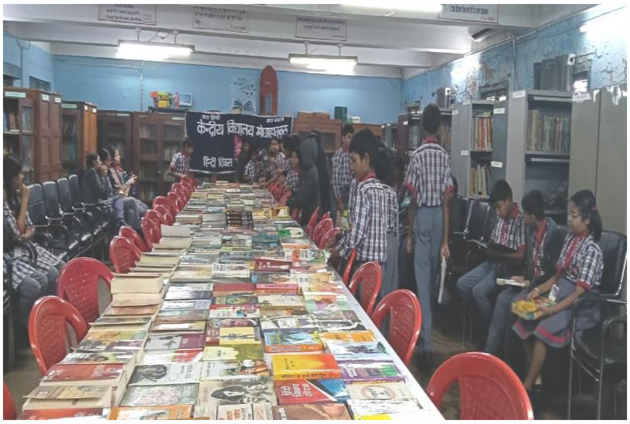

हिन्दी भाषा की पुस्तकों की प्रदर्शनी – के. वि. मेघाहातुबुरू

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार 14 सितंबर 1950 को भारतीय संविधान सभा ने हिंदी को भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकार किया गया। यह निर्णय भारत के संविधान द्वारा स्वीकृत किया गया और 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ अतः प्रतिवर्ष सितंबर माह में हिंदी पखवाड़ा बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

नाटक प्रतियोगिता – पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय पतरातू

चित्रकला प्रतियोगिता – केन्द्रीय विद्यालय सिंघारसी

केन्द्रीय विद्यालय सुरदा

“हिंदी हमारे राष्ट्र की एकता का सबसे मजबूत माध्यम है।”

— महात्मा गांधी

के. वि. सं. स्थापना दिवस

केंद्रीय विद्यालय संगठन (KVS) का 62वाँ स्थापना दिवस 15 दिसम्बर को रांची क्षेत्र के सभी केंद्रीय विद्यालयों में उत्साह, गर्व और गरिमा के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालयों में विशेष समारोह, सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ, भाषण, क्विज़, पोस्टर निर्माण, तथा प्रदर्शनियाँ आयोजित की गईं, जिनमें KVS की स्थापना, उसके उद्देश्यों, शिक्षा में योगदान तथा "गुणवत्ता, समान अवसर और राष्ट्रीय एकता" की भावना को प्रमुखता से रेखांकित किया गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम–पीएम श्री के. वि. दुमका

केन्द्रीय विद्यालय जामताड़ा

के. वि. सं. राष्ट्रीय खेल

केन्द्रीय विद्यालय संगठन की राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिता के.वि.सं. रांची संभाग ने उत्साह, अनुशासन और उत्कृष्ट प्रदर्शन के साथ अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराई। रांची क्षेत्र के विभिन्न केन्द्रीय विद्यालयों से चयनित प्रतिभाशाली खिलाड़ियों ने एथलेटिक्स, कबड्डी, खो-खो, फुटबॉल, वॉलीबॉल, बास्केटबॉल, बैडमिंटन, तीरंदाजी तथा अन्य खेलों में सक्रिय भागीदारी निभाई।

53वीं केवीएस एनएसएम फुटबॉल अंडर-14 बालक विजेता टीम पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय दीपाटोली, रांची

वॉलीबॉल बालक U-17 उपविजेता 53वीं केवीएस नेशनल 2024

के. वि. सं. राँची संभाग

क्षेत्रीय खेलकूद प्रतियोगिता

के. वि. चन्द्रपुरा में क्षेत्रीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन

क्षेत्रीय खेलकूद प्रतियोगिता हाई-जम्प (बालिका वर्ग) के विजेता

क्षेत्रीय खेलकूद प्रतियोगिता (बालिका वर्ग) के विजेता

के. वि. सं. राँची संभाग के विद्यालयों में दस बैगलेस दिन का क्रियान्वयन

राँची संभाग के विद्यालयों में आयोजित 10 बैगलेस दिवस ने सीखने को उत्सव बना दिया। पुस्तकों से मुक्त होकर विद्यार्थियों ने कला, खेल और कौशल आधारित गतिविधियों में बढ़-चढ़कर भाग लिया। इन दिनों ने सीखने को बोझ नहीं, बल्कि आनंद और अनुभव का माध्यम बनाया। बैगलेस दिवस ने समग्र, सृजनात्मक और जीवनोपयोगी शिक्षा की नई पहचान गढ़ी।

के. वि. जामताड़ा में 10 बैगलेस दिवस के तहत औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में भ्रमण

पीएम श्री के. वि. लातेहार

पीएम श्री के. वि. सिंघारसी

के. वि. लोहरदगा

के. वि. मेघाहातुबुरु

1. कल्पना की विवशता

किसको अपनी दिल की दास्ताँ वो सुनातीं,
डूबती कस्ती का माँझी किसको बनाती,
पोछती सिन्दूर को अपने ड्योढी पर बैठे,
स्वीकार इस सत्य को कल्पना कर ना पाती|
स्वीकार करे भी तो कैसे भला वो,
सावित्री बन कर के सेवा जिसने की हो,
करवा चौथ और तीज-त्यौहार की व्यर्थता पर,
खण्डित पति-पतवार जीवन बना हो|
देह से अदेह हो जाने का वो गम,
अंतिम उच्छवासों का दृश्य था निर्मम,
लांक्षणों के ग्लानि-सागर में अब वो,
जीवन उसका हो गया जैसे सितम|
जिजीविषाएँ छलनी होते अब वो देखे,
कामनाएँ अश्रुओं के जल में डुबोते,
क्रूर काल ने उसके इस जहाँ को,
रिक्त किया जीवन, वो अपनी विहीनता को देखे|
लीं थी एक जमीं कभी दोनों ने मिलकर,
कैंसर की नज़रें भी थीं उनपर बराबर,
दिल्ली-बॉम्बे के डॉक्टर भी हार जाएँ,
क्यों, अन्तक आगे बढ़ गया कुचक्र रचकर?
सोलह वर्ष की बिटिया विधि नाम उसका,
करना जीवन-संघर्ष यही अंजाम उसका,
विधि को क्यों विधि पर दया न आयी,
चलता-फिरता जग बना श्मशान उसका|
अब कहाँ ढूंढे वो अपने उस पिता को,
स्वयं ही तसल्ली देती अब वो खुद को,
उंगली पकड़कर जिसने चलना सिखाया,
शून्य में वो खो गए कर त्याग उसको|
शून्य ही में ढूंढती बाबा कहाँ हैं,
नींद में भी जागती किनारा कहाँ हैं,
सारे प्रश्नों को वे साथ ले चले गए हैं,
उसको तसल्ली दे वो इन्शा कहाँ है|
पांच वर्ष का भाई है अबोध उसका,
बड़े प्यार से नाम रखा अयांश उसका,
सूर्य की किरण सा चमकेगा सदा ही,
पर अभी खामोश है नीरव स्वर उसका|
बार-बार बाबा को वो देखता है,
माँ के सूनी माँग से वो पूछता है,
बाबा के नाक में आज क्यों है रूई,
रो रहे हैं क्यों पड़ोसी वो चीखता है|
खालीपन से तड़पती हुई माँ अब बोली,
एहसासों की खामोशी से जब वो डोली,
हिम्मत की दीवार अब जो ढह गया है,
हौसला जीने का दे जैसे कि गोली|
कल्पना ने अब हिम्मत खुद को बंधाया,
खुद ही बाप बनने का अब बीड़ा उठाया,
अब विधि विधि के हाथ न छलेगी,
अयांश को सच में सूर्य का किरण बनाया|

डॉ. नीरज कुमार
स्नातकोत्तर शिक्षक हिन्दी केन्द्रीय
केंद्रीय विद्यालय नामकुम

2. रोते रोते कहती थी

जाते-जाते आततायियों ने एक बार
मुड़कर देखा कि कहीं कोई
जीवन का अवशेष
शेष तो नहीं रह गया है ?

समूची किलकारियाँ समूल उदरस्थ
हो चुकी थीं |
जीवन का कोई चिह्न
शेष नहीं बचा था |

पर किसी कोने से फूट-फूटकर रोने की आवाज़
कानों को लगातार बेध रही थी |
ये करूण क्रंदन स्वर था ,
क्षत-विक्षत, रक्तस्नात माँ-भारती का |
रोते-रोते कहती थी – " इतनी जल्दी
जीवन तत्वों का समूल विनाश
नहीं हो सकता |
जहाँ-जहाँ बैठकर मैं रोई हूँ,
जहाँ-जहाँ मेरे आँसू का कतरा गिरा है ,

इस तपोस्थली आर्यभूमि में ,
मेरे आँसू की उन अगणित ,
अविरल सिन्धुधाराओं के आसपास
जीवन का एक चिह्न शेष रहेगा
हमेशा,
अहर्निश ,
सदा-सर्वदा,
अनंतकाल तक,
सभ्यता के अवसान तक,
और शायद उसके बाद भी |

डी. के. दास
प्र. स्ना. शि. (अंग्रेजी)
पी एम श्री के.वि. पतरातू रांची संभाग

3. बेटी हूँ न

मैं रोऊँगी नहीं,
पूछूँगी भी नहीं,
बेटी हूँ न!
हो सकता है,
मैं उन्हें बोझ लगती हूँ!
मेरे लिये प्यार बचा ही न हो !
शायद, एक ही खिलौना बचा था
'पुष्प' के लिए ले आये,
क्यों ?
पूछूँगी नहीं,
रोऊँगी भी नहीं,
बेटी हूँ न !
शैतानी 'पुष्प' करता हो,
और डांट मुझे पड़े!
'पुष्प' सोता रहे!
मैं काम करूँ!
मेरे लिए जली रोटियाँ ही बचे!
क्यों ?
मैं पूछूँगी नहीं,
मैं रोऊँगी भी नहीं,
बेटी हूँ न !
बेटी पराई होती है,
उसे अपना घर जाना होता है,
वो वहाँ की नूर होती है,
ऐसा माँ कहती है !
क्यों ?

पूछूँगी नहीं,
रोऊँगी भी नहीं,
बेटी हूँ न !
मुझे पता है,
एक दिन मैं किसी और को सौंपी जाऊँगी!
वह अंजाना होगा,
बेगाना होगा,
परवाना होगा,
हाय ! मेरा जीवन कैसा होगा !
क्या मुझे भी अग्निपरीक्षा देनी होगी ?
क्या मुझे भी आग के हवाले किया जायेगा?
क्यों ?
पूछूँगी नहीं
रोऊँगी भी नहीं,
बेटी हूँ न !
माँ..... मैं रोऊँगी
खूब रोऊँगी.....
और पूछूँगी भी !
जब मेरे 'पुष्प' की कलाई सूनी रह जायेगी,
जब तुम्हारे आँखों में आँसू होंगे,
जब पापा का चेहरा उदास होगा,
तब... मैं रोऊँगी...!
पूछूँगी भी..
बेटी हूँ न.....।

मणिकांत पाण्डेय 'वैरागी'
प्र.स्ना.शि. संस्कृत
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 3 बोकारो

4. खानपान की बात करें तो

खानपान की बात करें तो भारत में भरमार है।
बड़े पाव की मुंबई में होती जय-जयकार है।
दूध-दही के खाने पर हरियाणा का अधिकार है।

खानपान की बात करें तो भारत में भरमार है।
लिट्टी-चोखे की बिहार में होती जय-जयकार है।
दाल-भात के खाने पर पूर्वांचल का अधिकार है।

खानपान की बात करें तो भारत में भरमार है।
इडली-डोसा की दक्षिण में होती जय-जयकार है।
सांभर, रसम और नारियल चटनी का दक्षिण में प्रचार है।

खानपान की बात करें तो भारत में भरमार है।
दाल-बाटी चूरमा की मारवाड़ में होती जय-जयकार है।
किन्तु मिठाइयों में रसगुल्ला पर बंगाल का अधिकार है।

खानपान की बात करें तो भारत में भरमार है।
मक्की-रोटी और सरसों-साग की पंजाब में होती जय-जयकार है।
पर अर्बी के पत्तों (पतोड़ों) पर हिमाचल का अधिकार है।
खानपान की बात करें तो भारत में भरमार है।

जितेन्द्र कुमार
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
के. वि. गुमला रांची (झारखंड)

5. २० पैसे की भैंस

नाना जी ने खरीदी २० पैसे की भैंस
हमेशा चीजे लाते थे देकर वो कैश
ऐसी थी २० पैसे की भैंस।

वो भैंस बड़ी उसका पेट बड़ा
भूख भी उसके आगे खड़ा
जो भी मिलता वो खा लेती
हो ताजी या हो सड़ा
ऐसी थी २० पैसे की भैंस।

हरी घास उसकी कमजोरी
काली होकर खुद को समझे गोरी
भोला भाला चेहरा था उसका
पर थी उसकी नियत में चोरी
ऐसी थी २० पैसे की भैंस।
एक बार यूँ घटना घटी
जो खेत था उसके घर से सटी
वहाँ हरी घास
बढ़ गयी जगी उसकी लालच की प्यास।

मोटी-मोटी आँखे चमकी
तुरंत वहाँ वो जा धमकी
पर उसे ना थी खबर
सूखा कुआँ छुपा है उधर।
लालच ने उसे आगे बढ़ाया
फूटी किस्मत, औंधे मुहँ गिराया
सिर नीचे पीछे का हिस्सा ऊपर
साथ ही साथ दो हरी घास उसके मुहँ पर।

दो पैर टूटे एक सिंग टूटा
फिर भी जुबान से घास न छूटा
इसी बात की खुशी थी,
जो देख ना पाई उसका सिर भी फूटा |
अब ना भैंस रही , ना नानाजी ही रहे
दोनों ऊपर को सिधार गए
इनको लेने ना जाने कब
बिन बुलाए यमराज पधार गए |
ऐसी थी २० पैसे की भैंस
जिसे नाना जी लाए थे देकर डायरेक्ट कैश |

दयाल साव
कला शिक्षक
केंद्रीय विद्यालय भुरकुंडा

6. दोस्ती

साथ थे हम हर गली, हर राह में,
हँसी-मज़ाक, खेल—हर चाह में।
कभी झगड़े, कभी मनाना,
कभी किताबें, कभी बहाना।
आज खबर आई ट्रांसफर की अचानक,
सामान बाँध कर चल दिया वो संग अपने जनक।
स्कूल की बेंच खाली-खाली लगती है,
उसके बिना क्लास सूनी-सूनी लगती है।

तेरी हँसी अब यादों के घर में बसती है,
तुझे देखने, तेरे संग खेलने को ये आंखे तरसती हैं।
पर दोस्ती का बंधन दूरियों से ना टूटेगा,
तेरा मित्र तुझे हर प्रार्थना हर दुआ में ढूँढेगा।

कल फिर मिलेंगे, ये आस बाकी है,
तेरे बिना भी मेरी किताबों में तेरी झलक बाकी है।
जहाँ भी रहना, खुश रहना मेरे दोस्त सदा आबाद रहो,
समक्ष के समक्ष नहीं तो क्या हुआ, उसे बस याद रहो

समक्ष रंजन झा
(पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय नामकुम, राँची)
कक्षा – X 'अ'

7. आसमान

चलो आज उस आसमान की कहानी सुनती हूँ,
जिसने देखा है इतिहास इस धरती पर उसकी
विशालता बताती हूँ।

है धरती के चारों तरफ वो,
नीले रंग से ढका रहता है वो,
घिरा रहता है बादलों से वो,
न जाने किससे आंख-मिचौली खेलता है वो।

बसा कर रखता है वो तरह-तरह के बादल,
कभी-कभी इंद्रधनुष को भी गले लगाता,
सुबह सूरज से रोशन कर देता यह जहान,
और,रात को वह चाँद को सजाता।

रात को तारों से भरे इस आसमान में सिर्फ़ खूबसूरती
झलकती है,
पता नहीं हर सुबह और शाम कैसे यह अपना रंग
बदलती है,
एक नया रंग-रूप लेकर यह कैसे हमारे मन को लुभाती
है।

जब तक जाओ इस दुनियादारी से तो इस आसमान की
छाया के नीचे सो जाना,
याद करके किसी की याद मुस्कुराकर देखना उस
आसमान को और हवाओं की छुअन महसूस करके बस
खो जाना।

रिया
कक्षा -11 अ
पीएमश्री केंद्रीय विद्यालय पतरातू

8. शिक्षक और विद्यार्थी

शिक्षक और विद्यार्थी का अटूट है संबंध ,
जाने अनजाने मिल जाते अपने बन जाते हैं।

दोनों की इच्छा अर्जित करना लक्ष्य है,
मिलकर प्रयास करना प्राप्त होगा लक्ष्य है।
जीवन की धारा के ये दो किनारे हैं ,
एक चंचल तो दूसरा निश्छल,
दोनों का मिलना जीवन का खेल है,
खेल है पढ़ाई का जीवन की लड़ाई का।

शिक्षक और विद्यार्थी का अटूट है संबंध ,
जाने अनजाने मिल जाते अपने बन जाते हैं।

लहरों को चीरकर आगे बढ़ना है,
जीवन की धारा में आगे चलना है।
शिक्षक बिन छात्र और छात्र बिन शिक्षक
अधूरा सा लगता है,
दोनों को मिलना है मिलकर चलना और आगे बढ़ते जाना है।

शिक्षक और विद्यार्थी का अटूट है संबंध,
जाने अनजाने मिल जाते अपने बन जाते हैं।

क्रोध व प्रेम का रिश्ता है अनमोल,
शिक्षक व छात्र का संबंध है अनमोल।
डाँट और स्नेह का मजबूत धागा है,
जिस पर ही बनना भविष्य का तागा है।

शिक्षक और विद्यार्थी का अटूट है संबंध,
जाने अनजाने मिल जाते अपने बन जाते हैं।

नीलम शर्मा
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक – 2,
धनबाद(रांची संभाग)

9. मातृभूमि

मातृभूमि है प्यारी अपनी,
सबसे न्यारी, सबसे अपनी।
इसके आँगन खेलें-गाएँ,
मिलकर खुशियों के गीत सुनाएँ।
हरे-भरे हैं खेत सुहाने,
नदियाँ, पर्वत बड़े मनभावने।
रंग-बिरंगे फूल खिलाते,
पक्षी मधुर स्वर में गुनगुनाते।
वीरों ने बलिदान दिया है,
देश का ऊँचा मान किया है।
हम भी उनका मान बढ़ाएँ,
सच्चे नागरिक बन दिखलाएँ।
सत्य, प्रेम और मेहनत से,
चलें सदा हम अच्छी राह से।
भारत माँ का नाम बढ़ाएँ,
विश्व में ऊँचा ध्वज लहराएँ।
मातृभूमि का मान करेंगे,
हरदम इसका ध्यान रखेंगे।
स्वच्छ, सुरक्षित देश बनाएँ,
मिलकर नया सवेरा लाएँ।

मनस्वी मेहता
कक्षा – छठीं ब
केंद्रीय विद्यालय नं 1 एच ई सी राँची

10. क्या कहती है कविता

कवि के मन की गंभीर व्यथा कहती है कविता,
कवि के मनोभावों को पंक्तियों में रचती है कविता |
वो मर्म-स्थिति, जहाँ कुछ भी कहना संभव न हो,
वहाँ भी सारे बंधन तोड़ सब कहती है कविता।

कविता उस पक्षी की भी है, जो आजादी की राह देख रहा हो |
कविता उस राही की भी है, जो सफर को ही मंजिल समझ रहा हो |
कविता उस दीये की भी है, जो आंधियों के समक्ष भी डटकर खड़ा हो |
कविता उस पहाड़ की भी है, जो झरनों को आश्रय देता हो |

कविता सिर्फ शब्दों से कोई पंक्ति बनाना नहीं होता,
कविता सिर्फ हास्यास्पद या व्यंग्यात्मक नहीं होता।
सिर्फ, विचारों और भावनाओं से नहीं होती कविता,
पूरे अस्तित्व को खींचकर एक विराम की तरह होती है कविता।

कविता है तो प्रकृति के सौंदर्य की अनुपम शाखा है,
कविता है तो वीरों के बलिदानों की अद्भुत गाथा है,
कविता है तो ईश्वर के माया, महिमा का गुणगान है
कविता है तो कवि के अस्तित्व की पहचान है।

विद्यासागर आर्य
कनिष्ठ सचिवालय सहायक
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय गोमोह

11. मेरी माँ

मुद्दत से आरज़ू थी लिखूँ आप पर, कुछ मैं भी माँ।
सामर्थ्य नहीं मुझमें इतना, कैसे करूँ गुणगान मैं माँ॥
आपकी सादगी, विनम्रता,शिष्टता और बुद्धिमत्ता को बतलाने का, साहस कहाँ से लाऊँ माँ।
आप अथाह गुणों का सागर हो,मैं एक मसीह की बूंद हूँ माँ॥
कैसे सीमित शब्दों में लिख दूँ मैं आपको, आप तो पूरा मातृ पुराण हो माँ।
आपके इस प्यार-दुलार को, हम शत शत नमन करते हैं माँ॥
आप ममता की मूरत हो, हमारे घर का अन्तः स्थल हो माँ।
हम आपके साये में पले-बड़े हुए, आप हम सब का हृदयस्पन्दन हो,
निज जीवन की हो साधना माँ ॥
आपका एक -एक शब्द , मेरे लिए वरदान है माँ।
सादा जीवन उच्च विचार का, आप सदा पाठ पढ़ातीं आई माँ ॥
सुख हो दुख हो, चाहें कुछ हो, आपको सदा पास में खड़ीं पाई माँ।
सुख -दुख तो आते -जाते हैं , कहकर आपने धीर बंधाई माँ॥
आपकी मीठी वाणी सुन , मन प्रफुल्लित हो उठता है माँ।
जब कभी आवाज़ कमजोर लगी, मर्मस्थल मेरा अवरुद्ध हुआ जाता है माँ॥
आप (दोनों) दीर्घायु हों और स्वस्थ रहें। निस-दिन मन यही कामना करता माँ॥
आप त्याग, सहनशीलता की, अनोखी एक मिसाल हो माँ।
आपका हर-एक वचन, करता पथ मेरा आलोकित माँ॥
घर का आधार पिता हमारे जिनसे यह घर महकता है, उनकी सेवा आपका उद्देश्य रहा।
आप उनका सम्बल और पूर्णता माँ॥
मंजू, अंजू और माधुरी दी, सब आपकी ही परछाई माँ।
अनुज राजीव हैं धैर्यवान,सदगुणों की खान, करते पिता की अगुवाई माँ॥
आप अपनी ममता के आँचल में,
ये सुरभित फुलवारी सींचती आयीं माँ।
ऐसे ही सदा बनी रहे इस बगिया की, सुवासित अमराई माँ॥
ईश्वर ऐसा आशीष दें हमको।
हम अनवरत मातृ-पितृ आशीषों का, करें अमृत पान माँ॥
हर दिन हमारा मातृ-पितृ दिवस है।
आप दोनों के आशीर्वाद से माँ॥

मुक्तेश
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका (गणित)
केन्द्रीय विद्यालय मैथन डैम

12. बिहू

बिहू के रंग में हो गए मग्न,
उत्सव मनाने की चढ़ी लगन |
मौज-मस्ती में खोए हुए है,
नव-नव बीज बोए हुए है |

रंग चढ़ा उत्सव मनाने का,
मेल आपस में बढ़ाने का |
हर्ष उत्साह जोश की है बारी ,
संकट दूर हो जगी उम्मीदें सारी |

मंच बना बरगद पर मनोहारी,
ढोल,खोल,गोगोन, शिंगा, जतली |
हो पंक्तिबद्ध उत्साहित भारी,
आज हटो सब अपनी बारी |

घास बाँस आंवला बाट जोह रही है,
युवा प्रतीक्षा में नयन खो रही है |
खड़ी नृत्यांगनाएँ लजा रही है,
पहन मेखला चादर भारी |

डूबे श्रम साधना में नर-नारी,
रोपे धान सब बारी-बारी |
सुंगा-पीठ चिरा मांगशो व्यंजन लजीज,
दही मलाई गुड़ संग परोसें अजीज |

सत्रिया नृत्य की अनूठी कला है बिहू ,
आशीर्वाद और समृद्धि की प्रार्थना है बिहू |
सादगी और एकता की कृति है बिहू,
सद्भाव और समाजप्रियता का त्यौहार है बिहू |

नीलम सैनी
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका हिन्दी
केन्द्रीय विद्यालय मैथन

13. भजन

माँ शारदा तेरी वीणा, जो राग गा रही है,
उसकी ध्वनि में माते,मेरी भी धुन मिला दे.....
आयी शरण में तेरे,निज अंक में बिठा ले,
विद्या का दान देकर,मन मंजरी खिला दे |
माँ शारदा तेरी वीणा.....
शुचि वसन तेरे उज्ज्वल, ये लोक जगमगाये,
मेधा बने विवेकी, यह ज्ञान तू दिला दे |
माँ शारदा तेरी वीणा ....
मोती को चुन सकूँ मैं, तम हर प्रकाश कर दे,
बन पाऊँ हंस तेरा, गति वो मति में ला दे |
माँ शारदा तेरी वीणा ....
पुस्तकों में माता, तेरी ही छवि निहारें,
आनंद की हो धारा,वो अमिय तू पिला दे |
माँ शारदा तेरी वीणा .....
कल्याण हो जगत का,सुख शांति घर पधारे,
नित सरोज बन खिलें हम,स्फटिक माल तू हिला दे |
माँ शारदा तेरी वीणा ....

सौरव कुमार
केंद्रीय विद्यालय पलामू
प्राथमिक शिक्षक (संगीत)

14. प्रकृति

सूरज निकला नभ में ऊँचा,
रोशनी से जग-जगमग।

चिड़ियाँ गाएँ मधुर स्वर में,
मन हो जाता मगन॥

फूल खिले बगिया के भीतर,
महके सबका मन।

नदी बहती कल-कल करती,
गूँजे उसकी तान॥

पेड़ हमें फल-फूल दें,
छाया भी हरदम।

धरती माँ का रूप अनोखा,
प्यारा है हरदम॥

प्रकृति सबको देती जीवन,
इसका मान करें।

हरित धरा को सजाएँ हम,
मिलकर काम करें॥

कोमल राणा
कक्षा – 10वीं
केन्द्रीय विद्यालय गिरिडीह

15. माँ की इच्छा

अपनी गुड़िया को काम पर जाता देख
एक माँ उससे क्या कहती है, सुनो...
बचपन फिर से पा जाऊँ मैं,
तुझ जैसा बन पाऊँ मैं।
कितने ख्वाब दबा रखे हैं,
उनको भी फिर जी पाऊँ मैं।
जब मैं छोटी बच्ची थी,
सपने खूब सजाती थी।
अब जीवन की इस ढलती बेला में,
क्यों ना वो सपने पूरे कर पाऊँ मैं।
विवाह ने जकड़ा जंजीरों में,
मजबूरियों ने बाँध दिया।
मैं भी एक काबिल लड़की थी,
काश ये दुनिया को दिखा पाऊँ मैं।
मेरी बच्ची, तुझे प्रेम से पाला है,
अपने हर सपने को खोकर
तुझे बचपन से संभाला है।
जब बूढ़ी मैं हो जाऊँगी,
क्या वही प्रेम तुझसे पाऊँगी मैं?
मत समझना मुझको गलत,
मन मेरा भी करता है।
इस दुनिया में खुद को साबित करूँ,
बता मेरी बेटी,
क्या अपनी पहचान बना पाऊँगी मैं?

रश्मि रानी
प्राथमिक अध्यापिका
केंद्रीय विद्यालय मैथेन डैम

16. पथभ्रष्ट

कभी कभी आता है आक्रोश
जब देखती हूँ,
स्वार्थ और भेदभाव का नंगा नाच
पकड़ने के लिए 'रंगीन' मछलियों को
कैसे फैलाया है, मछुआरे ने अपना जाल।
ख़ुद का घर भरने का यत्न करने में
बेच दी इन्होंने अपने ईमान की पूंजी।
ईमानदारी और सच्चाई का क्या पता इन्हें,
अरे! ये तो धन के पुतले हैं,
जो थोड़ा सा लालच पाते ही,
खोल देते हैं अपना मुंह।
इन सब दरिद्र धनवानों के बीच
ईमानदार उस 'द्रौपदी' की तरह भयभीत तमाशा देख रहा है,
जिसको कभी भी लगाया जा सकता है दांव पर
और अपना मन बहलाने के लिए किया जा सकता है कभी भी
उसका 'चीर हरण'।
उस राजा 'हरिश्चन्द्र ' की तरह भी है कुछेक लोगों की स्थिति,
जिन्हें अपनी बात का मान रखने के लिए
खुद बिकना पड़ता है 'डोम'के हाँथो
और जलानी पड़ती है अपने ही बच्चे की लाश
पत्नी से मेहनताना माँगकर।
सोचती हूँ,
क्या कभी ऐसा समय भी आएगा,
जब भर जाएगा इनका पेट?
और इनकी भूखी आत्मा
तलाशेगी अपने जीवन में किए गए कुछ पुण्य
जिनके सहारे ये पार हो सकें, इस भवसागर से।
हे प्रभु! सद्बुद्धि दे इन्हें
क्योंकि ये पथभ्रष्ट हैं।।

प्रज्ञा राय
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय क्रमांक-1 बोकारो

18. कोणार्क : जहाँ समय पत्थरों में धड़कता है

जब कभी 'कोणार्क' शब्द कानों में गूंजता है, तो स्मृति में रवींद्रनाथ ठाकुर की यह पंक्ति स्वतः जाग उठती है — 'यह पत्थरों में कविता है, समय की शिला पर उकेरा गया संगीत'। जगदीशचंद्र माथुर का नाटक 'कोणार्क' पढ़ते समय यह भाव भीतर गहराता गया कि इस बार ठंडी की छुट्टियों में सपरिवार इस सूर्यनगरी के प्रत्यक्ष दर्शन करने ही हैं — जहाँ पत्थरों ने समय की श्वासों को पकड़ रखा है। उन मूर्तियों की आँखों में झाँककर वह उजास तलाशुंगा, जो काल के अतीत और वर्तमान का भेद मिटा देती है।"

2025 की कड़ाके की ठंड ने जब हड्डियों को कंपाना शुरू किया, तब हमने परिवार सहित उड़ीसा की ओर यात्रा का मन बनाया। 3 जनवरी की वह सुबह थी, जब मैथन डैम से निकलते समय आसपास कोहरा कुछ इस तरह लिपटा हुआ था मानो नींद अभी भी शहर की गलियों में अलसाई घूम रही हो। लेकिन जैसे ही उड़ीसा की धरती पर पाँव रखा, मौसम ने सुहाने वसंत का आँचल ओढ़कर हमारा स्वागत किया।

भुवनेश्वर स्पेशल फेयर ट्रेन से मेरामण्डली पहुँचे – जहाँ मेरे बड़े भाई प्रेमजीत टाटा स्टील में फील्ड इंचार्ज हैं। कंपनी की टाउनशिप अत्याधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण है – साफ-सुथरी सड़कें, हरियाली से लहलहाते मार्ग बहुमंजिला इमारतें और एक सुसंस्कृत जीवन की साकार झलक- हवा तक अनुशासित चलती प्रतीत हो रही थी। वहाँ की टाउनशिप में ठहरने का अनुभव लेते हुए रात वहीं विश्राम किया और अगली सुबह भैया के क्वार्टर से ही हमारी कार रथ की तरह सूर्य मंदिर की ओर बढ़ चली—गंतव्य था जगन्नाथपुरी और फिर कोणार्क।

हमारी कार परिवार के उल्लास से भरी हुई थी—भाभी, मेरी पत्नी, दोनों बेटियाँ—अनुभूति और अंशिका, बेटा अनुराग। भैया स्वयं ड्राइव कर रहे थे। रास्ते के दोनों ओर हरियाली की चादर थी, दूर पहाड़ियों की नीली परछाइयाँ ऐसे लग रही थीं, जैसे किसी चित्रकार ने नीले और हरे रंगों को एक सपनीले कैनवास पर फैलाया हो। जनवरी की धूप ने यहाँ एक अलग ही रूप ले लिया था— मानो शिशिर के आँगन में वसंत का पहला पग। मोशन सिकनेस के कारण बच्चों को उल्टियाँ आ रही थी, इसलिए हमें बार-बार ठहरना पड़ रहा था, लेकिन इससे उनके उत्साह में कोई कमी नहीं दिख रही थी। उनके बाल-जिज्ञासा से भरे प्रश्न निरंतर जारी थे। इन्हीं जिज्ञासाओं और उत्साहों के मिश्रित स्वर के साथ हम पुरी पहुँचे।

पहुँचते-पहुँचते दिन ढलान पर था, लेकिन धूप तेज थी। हवा में एक समुद्री ठंडक घुली हुई थी। होटल में चेक-इन के बाद हम समुद्रतट की ओर बढ़े। समुद्र तट की रेत पर पैर रखते ही एक अनूठा कंपन आत्मा में उतर गया। सागर की लहरें, जो कभी उन्मत्त बालक की तरह दौड़ी आतीं, तो कभी लजाती किशोरी-सी लौट जातीं। बच्चों की आँखों में पहली बार समुद्र देखने का कौतुक था। उन्होंने पहली बार समुद्र-स्नान का आनंद लिया। लहरें आगे बढ़तीं और हमसभी को भिगोते हुए फिर शरारत से लौट जातीं। अनुराग के लिए समुद्र का खारा पानी किसी रहस्य से कम न था, नहाते समय जैसे ही खारा पानी मुँह में गया, झल्लाकर बोला—"ये तो खट्टा पानी है, किसने इसमें इतना नींबू डाल दिया?" — हम सब हँस पड़े। हमने महसूस किया कि यात्रा केवल दृश्य-अनुभव नहीं होती, यह जीवन के नए स्वाद चखने का माध्यम भी है।

डूबते सूरज ने समुद्र को पीताभ बना दिया था, मानो क्षितिज पर सूरज धीरे-धीरे पिघल रहा हो और लहरें उस पिघलन को बड़े जोर-शोर से समेट रही हों। यही जीवन है—आना-जाना, लहराना और फिर लौट जाना...

रात्रि में भगवान जगन्नाथ के मंदिर गए—भव्य, आध्यात्मिकता से ओतप्रोत, भक्ति में लीन और स्थापत्य की दृष्टि से अद्भुत। कलिंग शैली में निर्मित यह मंदिर भारतीय सांस्कृतिक चेतना का आभामंडल है, जिसकी परछाइयों में भक्तों की अनगिन पीढ़ियाँ रहीं हैं। यह आस्था का वह केंद्र है जो केवल दर्शन तक सीमित नहीं — यह भारत की सांस्कृतिक आत्मा की धड़कन है। मुख्य मंदिर के साथ-साथ लक्ष्मी मंदिर, सुभद्रा मंदिर, गणेश मंदिर आदि छोटे मंदिरों में भारतीय संस्कृति का अद्भुत वैविध्य देखा। भीतर की हर मूर्ति, हर शिला, एक कथा कहती है। महाप्रसाद का स्वाद आस्था में डूबे आत्मिक संतोष जैसा था।

अगले दिन हम निकले कोणार्क की ओर। रास्ते में चंद्रभागा समुद्रतट पर थोड़ी देर ठहरे। बच्चों ने बीच-बाइकिंग का रोमांचक अनुभव लिया, समुद्र की लहरों से स्पीडबोट से होड़ लगाई। एक आनंदमय जीवन्तता चारों ओर फैली थी। 11 बजे के करीब हम कोणार्क पहुँचे। मंदिर के विशाल परिसर में जैसे ही पाँव पड़ा, लगा समय ठहर गया है। बाहर टिकट खिड़की पर भीड़ थी, लेकिन उससे अधिक भीड़ थी लोकल गाइडों की। हमने एक विनम्र गाइड चुना—जीतू साहू, जो धैर्य, ऐतिहासिक-ज्ञान और कथा-कला से भरे हुए थे। सबके प्रश्नों के उत्तर देते समय उनका शैली-वैविध्य सराहनीय था। उन्होंने सबसे पहले कोणार्क मंदिर की उत्पत्ति की कथा बताई। इस मंदिर का निर्माण 13वीं शताब्दी में गंग वंश के नरेश नरसिंहदेव प्रथम ने करवाया था। यह मंदिर सूर्यदेव को समर्पित है। इसके निर्माण कार्य में 1200 शिल्पियों ने 12 वर्षों तक श्रम किया। मुख्य वास्तुकार का नाम 'विश्वकर्मा' का पुत्र 'बीशु महाराणा' था। गाइड ने जब यह कहा कि "यह मंदिर नहीं, समय का रथ है"—तो सचमुच मेरे भीतर कुछ काँप गया।

मंदिर को एक भव्य रथ के रूप में निर्मित किया गया है, जिसमें बारह जोड़ी विशाल पहिए और सात घोड़े बने हैं— प्रत्येक पहिए की नक्काशी इतनी सूक्ष्म है कि वह दिन और समय के चक्र को सूचित करता है। इन पहियों के बीच-बीच में धुरी की तरह बने सूर्योदय और सूर्यास्त के संकेतक हैं। यही नहीं, इन पहियों की छाया से समय की सटीक गणना की जा सकती थी। सात घोड़े सप्ताह के सात दिनों के प्रतीक। क्या अद्भुत विज्ञान और कला का संगम!

मंदिर की मूर्तिकला एक जीवंत महागाथा है। बाहरी दीवारों पर जीवन की विविध झांकियाँ उकेरी गई हैं—नारी जीवन के विविध पक्ष, नृत्य, संगीत, प्रेम, मातृत्व और युद्ध। कई मूर्तियाँ मैथुनरत भी हैं, जिन्हें गाइड ने अत्यंत गरिमा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझाया—“ये वासना नहीं, सृष्टि के मूल भाव हैं। इनसे न तो घबराना चाहिए, न ही इनका उपहास करना चाहिए। यह कला है, जीवन की सहज स्वीकृति है।” गाइड ने यह भी बताया कि चीन, बर्मा और थाई संस्कृति से प्रभावित कुछ मूर्तियाँ इस बात का संकेत देती हैं कि यह मंदिर भारत के अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक संपर्कों का भी प्रतीक रहा है।

रवींद्रनाथ टैगोर ने कोणार्क मंदिर को “Where the language of stone surpasses the language of man” कहा था। उस क्षण यह पंक्ति मेरे भीतर एक प्रतिध्वनि बन गई थी। सचमुच, ये पत्थर बोलते हैं, गाते हैं, चेतना की गहराइयों से संवाद करते हैं।

मंदिर के सामने स्थित नृत्यमंडप अब खंडहर में बदल चुका है, लेकिन उसकी दीवारों पर उकेरे गए नर्तक-नर्तकियों की आकृतियाँ आज भी संगीत की थिरकन से कंपन करती प्रतीत होती हैं। उस मंडप में खड़े होकर लगा कि कहीं दूर से शंखनाद हो रहा है, मानो देवगण प्रस्तुति के लिए एकत्र हो रहे हों।

कोणार्क का मंदिर आज क्षतिग्रस्त है—गाइड ने बताया कि किस प्रकार बार-बार आक्रांताओं ने इसे नष्ट करने का प्रयास किया। लोहे के केंद्र स्तंभ को निकालने के बाद मुख्य मंदिर का गर्भगृह ढह गया। शिखर का पतन, मूर्तियों का विदारण — इतिहास की क्रूरतम स्याहियाँ हैं। किंवदंती है कि मंदिर के शीर्ष पर एक शक्तिशाली चुम्बकीय पत्थर था जो समुद्री नाविकों के कंपास को भ्रमित करता था — इसलिए इसे ही 'ब्लैक पैगोडा' कहा गया।

शाम पाँच बजे हम वहाँ से लौटे। लौटते समय हमारी कार का एक हल्का-सा एक्सीडेंट हुआ, लेकिन भैया की सूझबूझ और सामने वाले ड्राइवर की संयमित बातचीत ने स्थिति को संभाल लिया।

स्टेशन पर विदा के समय, जब ट्रेन धीरे-धीरे प्लेटफार्म छोड़ रही थी, मेरी बच्चे खिड़की से बाहर झाँककर पूछ रहे थे --हम फिर कोणार्क कब आएँगे बड़े पापा? जवाब में उनके बड़े पापा और बड़ी मम्मी उदास मुस्कान के साथ कह रहे थे, अभी उतरो, अभी चलते हैं। हम सब हँस रहे थे, लेकिन सबकी आँखें भरी थीं। हमारी ट्रेन रफ्तार पकड़ रही थी लेकिन हमारा एक भाग पीछे कोणार्क में ही उलझकर रह गया था। कोणार्क केवल एक मंदिर नहीं, यह समय की वह रचना है जो पत्थरों में धड़कती है। यह स्थापत्य है, जो खंडहर होकर भी अमर है। यह मूर्तिकला है, जो जीवन का घोष है। यह वह भाषा है, जिसे मनुष्यता ने रचा और आज भी वह जीवन को दिशा देती है।

इस यात्रा ने हमें यह सिखाया कि भारत का गौरव उसके पत्थरों में नहीं, उन पत्थरों में उकेरी गई चेतना में निहित है। मैंने सीखा कि कला, इतिहास और संस्कृति केवल देखने की वस्तुएँ नहीं, अनुभव की सम्पदा होती हैं। और कोणार्क ने मुझे यह अनुभव दिया कि जहाँ जीवन ठहरता है, वहाँ वह बोलने लगता है, उत्सव बन जाता है। याद आता है- रवींद्रनाथ ठाकुर ने कोणार्क को "संगीत में बँधी हुई चुप्पी" कहा था। परन्तु मेरे भीतर अब भी पत्थरों पर उकेरी गई वह संगीतमय चुप्पी मुखरित होकर गूँज रही थी। वे पत्थर भले मौन हैं, परन्तु उनका मौन सचमुच संवाद करता है — समय से, जीवन से और सनातनता से।

कुमार आदर्श
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक हिन्दी,
केंद्रीय विद्यालय मैथन डैम

18. अम्मा

घर में अम्मा, बाहर अम्मा,
चूल्हा अम्मा, चौका अम्मा,
झाड़ू -पोछा, गाय- भैंस औ '
खेत खलिहान हर जगह ही अम्मा
कैसे सब कर लेती थी अम्मा
सबके दुख हर लेती थी अम्मा
अम्मा जरा बताना मुझको
नादाँ हूँ समझाना मुझको
जब भी कभी मुसीबत आती
अम्मा डट खड़ी हो जाती
सबको निर्भय कर जाती थी
कभी न तुम हारी थी अम्मा
मेरी प्यारी-प्यारी अम्मा
भईया जब बीमार हुए थे
चलने में लाचार हुए थे
झाड़-फूंक दवा-दारू
सारे करतब बेकार हुए थे
बाबूजी भी डरे हुए थे
दादी-दीदी बड़के भइया
हार मानकर पड़े हुए थे
केवल तुम्ही डटी थी अम्मा
उम्मीदों से पटी थी अम्मा
विश्वास तुम्हारे रंग लाए थे
भइया फिर से चल पाये थे
मेरा परिचय -
'पेट पोछना' अम्मा
सबको यही बताती थी तुम
कितना प्यार लुटाती थी तुम
जब दीदी मुझको करिया कहती थी,
तुम मुझको घी का घरिया कहती थी,
प्यार तुम्हारा पाकर अम्मा
किससे मैं डरता था अम्मा

जब भी मैं भूखा होता था
तुमको पता चल जाता था कैसे ?
क्या खाऊँगा,
कब खाऊँगा ,
लौट कर कब मैं घर आऊँगा
कैसे जान लेती थी अम्मा
मन को पढ़ लेती थी अम्मा

घर से दूर जब मैं होता था
दुखी उदास जब मैं सोता था
झट सपने में आ जाती थी
लोरी मुझे सुना जाती थी
दुख देख तुम्हें डर जाता मानो
हाथ जोड़ ये कहता मानो
तेरा लाल सुखी हो अम्मा
फिर ना कभी दुखी हो अम्मा
इसे न कभी सताऊँगा
लौट के अब ना आऊँगा

हम सबको छोड़ गयी तुम अम्मा
मुँह को मोड़ गयी तुम अम्मा
दुखी -उदास जब मैं रोता हूँ
रात में जब भूखा सोता हूँ
याद तुम्हारी आती है अम्मा
फिर से वापस आ जाओ तुम
लोरी मुझे सुनाकर अम्मा
ऐसी नींद सुला दो अम्मा
कभी न नींद से जागूँ मैं अम्मा
दुख से कितना भागूँ मैं अम्मा!!

चिंता मणि सिंह
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय क्रमांक -1 बोकारो

19. यात्रा- वृत्तांत : जिज्ञासा और खोज का एक दिन

स्थान:- विद्यार्थियों के साथ छत्रपति शिवाजी महाराज वस्तु संग्राहलय (मुंबई) में

मुंबई की एक सुहानी सुबह थी जब मैं अपने उत्साही और जिज्ञासु विद्यार्थियों के समूह के साथ छत्रपति शिवाजी महाराज वस्तु संग्रहालय (CSMVS) की सैर पर निकली। यह संग्रहालय पहले 'प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूज़ियम ऑफ वेस्टर्न इंडिया' के नाम से जाना जाता था। यह दिन लंबे समय से प्रतीक्षित था—कक्षा से बाहर एक अवकाश, परंतु सीखने से भरपूर। एक शिक्षक के रूप में मैं हमेशा मानती हूँ कि इतिहास केवल किताबों में नहीं, बल्कि देखने, छूने और अनुभव करने से जीवंत होता है। और जिज्ञासा तथा आश्चर्य को जगाने के लिए भारत के सबसे प्रतिष्ठित संग्रहालयों में से बेहतर स्थान और क्या हो सकता है?

दक्षिण मुंबई के हृदय में स्थित यह संग्रहालय गेटवे ऑफ इंडिया के निकट है और कोलाबा की औपनिवेशिक छटा से घिरा हुआ है। जैसे ही हम भवन के पास पहुँचे, विद्यार्थियों की चहल-पहल थम गई और उसकी जगह विस्मय ने ले ली। इमारत अद्भुत थी—भव्य गुंबद, मेहराबदार खिड़कियाँ और इंडो-सरैसैनिक स्थापत्य का अद्वितीय संगम मानो किसी कहानी की किताब से निकला हो।

"क्या यह सच में एक संग्रहालय है?" एक विद्यार्थी आश्चर्य से फुसफुसाया।

जॉर्ज विटेट द्वारा डिज़ाइन की गई यह इमारत बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में 1905 में वेल्स के राजकुमार की यात्रा की स्मृति में बनाई गई थी। आज यह महान मराठा योद्धा छत्रपति शिवाजी महाराज के सम्मान में भारत की इतिहास और धरोहर का गौरवपूर्ण स्मारक है।

भीतर प्रवेश करते ही उत्साह का माहौल गंभीर श्रद्धा में बदल गया। संग्रहालय के कर्मचारियों ने हमारा गर्मजोशी से स्वागत किया और संक्षिप्त परिचय के बाद विद्यार्थियों के लिए विशेष ऑडियो गाइड उपलब्ध कराए। हम छोटे समूहों में बँट गए और अपनी समय-यात्रा आरंभ की।

हमारा पहला पड़ाव प्राचीन कला दीर्घा था, जहाँ प्रारंभिक भारतीय सभ्यताओं की मूर्तियाँ और पुरावशेष प्रदर्शित थे। विद्यार्थी 2000 वर्ष पुराने टेराकोटा पुतलों और सिंधु घाटी, मौर्य और गुप्त काल की शिल्पकृतियों को देखकर मंत्रमुग्ध हो गए। नटराज की कांस्य प्रतिमा सबको सबसे अधिक भा गई। एक विद्यार्थी ने कहा, "ऐसा लगता है जैसे यह अभी भी नृत्य कर रहे हों।"

इसके बाद हम लघुचित्र दीर्घा में पहुँचे, जो मंद रोशनी में सजी थी ताकि शताब्दियों पुराने रंग सुरक्षित रह सकें। इन चित्रों की सूक्ष्मता और चटकीले रंग भारतीय पौराणिक कथाओं, राजसी जीवन और लोककथाओं की कहानियाँ सुनाते थे। विद्यार्थियों को अपने विचार साझा करने को कहा तो उनकी व्याख्याएँ सुनना सुखद अनुभव था—कुछ मज़ाकिया, कुछ गंभीर, परंतु सभी उत्सुकता से भरे हुए। "यह मेरा पसंदीदा है," एक विद्यार्थी ने राधा और कृष्ण का चांदनी रात के बगीचे वाला चित्र दिखाते हुए कहा। "यह तो किसी सपने का दृश्य लगता है।"

मराठा इतिहास खंड में हम छत्रपति शिवाजी महाराज के युग की तलवारें, कवच, मानचित्र और पत्रों के बीच पहुँचे। विद्यार्थियों को शिवाजी महाराज की तलवार की प्रतिकृति ने विशेष रूप से आकर्षित किया। उसे देखकर वे उनके साहस और रणनीति की कल्पना करने लगे।

"इतिहास यहाँ सचमुच जीवित लगता है," एक विद्यार्थी ने धीमे स्वर में कहा।

प्राकृतिक इतिहास दीर्घा में विद्यार्थियों ने भरे हुए जानवरों और भूगर्भीय नमूनों की ओर उत्साह से इशारा किया। कुछ को बाघ और हिमालयी भालू थोड़े भयावह लगे, जबकि अन्य उनकी सजीवता पर अचंभित रह गए। भारतीय पारिस्थितिक तंत्र को दर्शाने वाले डायरामे मानो अचानक जीव विज्ञान की कक्षा में बदल गए।

यूरोपीय और कला अनुभागों ने वैश्विक संस्कृतियों और व्यापार व उपनिवेशों से हुई विचारों की अदला-बदली की झलक दिखाई। चीनी मिट्टी के बरतन, फारसी टाइलें और ब्रिटिश सजावटी कला ने विद्यार्थियों को भारतीय और यूरोपीय सौंदर्यबोध के बीच अंतर पर चर्चा करने को प्रेरित किया।

करीब दो घंटे के भ्रमण के बाद हम संग्रहालय के शांत बगीचे में पहुँचे। शहर की चहल-पहल और इस हरियाली की शांति में अद्भुत अंतर था। विद्यार्थी अपने पसंदीदा अनुभव बाँटते हुए घास पर बैठकर दोपहर का भोजन करने लगे।

"मैं पुरातत्ववेत्ता बनना चाहता हूँ!" एक बालक ने कहा। दूसरा बोला, "क्या हम अगले साल फिर आ सकते हैं?"

अंत में हम संग्रहालय की दुकान पर गए, जहाँ विद्यार्थियों ने पोस्टकार्ड, बुकमार्क और छोटे-छोटे स्मृति-चिह्न खरीदे। जब बस रवाना हुई तो मैंने पीछे मुड़कर संग्रहालय के गुंबद को देखा, जो दोपहर की कोमल धूप में चमक रहा था। यह सिर्फ़ पुरानी वस्तुओं से भरा भवन नहीं था—यह एक ऐसा स्थान था जिसने नई पीढ़ी के लिए इतिहास को जीवित कर दिया था।

वह दिन केवल एक शैक्षिक यात्रा नहीं था—वह हमारी धरोहर के हृदय की ओर विद्यार्थियों की जिज्ञासु आँखों से की गई एक यात्रा थी। और एक शिक्षक के रूप में, मुझे इससे बेहतर कक्षा की अपेक्षा नहीं हो सकती थी।

द्रक्षा बानो

प्रशिशिक्षत स्नातक शिक्षिका (सामाजिक विज्ञान)

केन्द्रीय विद्यालय मैथन डैम

20. श्रेष्ठता की जंग में मानव और एआई

हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं जहाँ कल्पनाएँ विज्ञान बन चुकी हैं और मशीनें अब केवल औज़ार मात्र नहीं, बल्कि निर्णय लेने वाली बनती जा रही हैं। इस बदलाव की सबसे बड़ी मिसाल है — कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence या एआई)। यह एक ऐसी तकनीक है जिसने मानव जीवन को नई दिशा दी है, पर साथ ही कई नए सवाल भी खड़े किए हैं। क्या एआई मानव का सहयोगी है या उसका विकल्प? क्या यह विकास का अगला चरण है या एक चेतावनी?

एआई ने जिन क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है, उनकी सूची लंबी होती जा रही है — शिक्षा, स्वास्थ्य, रक्षा, परिवहन, कृषि, और यहाँ तक कि कला और साहित्य में भी। आज एआई चित्र बना सकता है, वीडियो दिखा सकता है, म्यूजिक कम्पोज़ कर सकता है, और बीमारी तक की सटीक पहचान कर सकता है। वह तेज़ है, थकानरहित है, और गलती से मुक्त होता जा रहा है।

लेकिन इन सभी खूबियों के बावजूद, एआई मानव जैसा नहीं हो सकता, क्योंकि उसमें नहीं है — संवेदना, नैतिकता, और आत्मबोध। एआई के बढ़ते प्रभाव से यह सवाल उभरना स्वाभाविक है कि क्या इंसान कहीं पीछे छूट रहा है? कई नौकरियाँ अब ऑटोमेशन की भेंट चढ़ रही हैं। निर्णय लेने की शक्ति भी धीरे-धीरे एल्गोरिद्म को सौंप दी जा रही है। लेकिन यहाँ हमें रुककर सोचना होगा — क्या सिर्फ़ तेज़ी और दक्षता ही सब कुछ है? इंसान की ताकत उसकी रचनात्मकता, अनुभव, और भावना में है। जहाँ एआई केवल पूर्व डेटा पर काम करता है, वहीं इंसान नई सोच को जन्म दे सकता है। जहाँ एआई जवाब देता है, वहाँ इंसान प्रश्न खड़ा करता है। यही अंतर हमें आज भी अद्वितीय बनाता है।

एआई के बारे में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह अब भी इंसान द्वारा नियंत्रित है — और यही बात सबसे बड़ा उत्तरदायित्व भी बनाती है। मशीनें खुद से अच्छा-बुरा नहीं तय करतीं, वे वही करती हैं जो उन्हें सिखाया जाता है। यदि हम नैतिक मूल्यों के साथ एआई को विकसित करें, तो यह समाज के लिए एक सशक्त सहयोगी बन सकता है। लेकिन यदि इसका उपयोग लालच, नियंत्रण या विनाश के लिए किया गया, तो परिणाम भयावह हो सकते हैं।

इसलिए एआई को दास की तरह देखना चाहिए, स्वामी की तरह नहीं।

यह आवश्यक नहीं कि “मानव बनाम एआई” का रिश्ता प्रतिस्पर्धात्मक ही हो। यह एक सह-अस्तित्व का रिश्ता भी बन सकता है — जहाँ एआई इंसान की सीमाओं को पूरा करे, पर मानवता की सीमाओं को पार न करे। तकनीक का विकास तब तक सार्थक है, जब तक वह इंसान को और बेहतर इंसान बनाए, न कि केवल तेज़ मशीन।

हमें एक ऐसी दुनिया बनानी होगी जहाँ तकनीक आगे बढ़े, पर इंसान पीछे न छूटे। जहाँ मशीनें हमारे काम आसान करें, पर हमारे संवेदनशील निर्णय अब भी हमारे हाथ में रहें।

शशि कुमार रमानी
संगणक अनुदेशक (माध्यमिक अनुभाग)
केन्द्रीय विद्यालय मैथन डैम

21. पैसे का सम्मान

एक समय की बात है। एक धनी व्यापारी सुंदर नगर में रहता था। उसका व्यापार बहुत बड़ा था परंतु अब वह बूढ़ा हो चला था। उसका एक पुत्र था, वह बहुत आलसी था। वह पैसे की कदर न करने वाला बच्चा था। व्यापारी ने सोचा कि मुझे अपना व्यापार छोड़ना होगा परंतु अगर मैंने अपना व्यापार अपने पुत्र को सौंपा तो वह उसे खत्म करके ही छोड़ेगा। व्यापारी ने एक तरकीब सोची। अगले दिन प्रातः काल उसने अपने पुत्र को बुलाकर आदेश दिया कि शाम तक पैसे कमाकर लाओ वरना शाम को भोजन नहीं मिलेगा। पुत्र घबरा गया जो व्यक्ति भोजन के लिए भी पलंग से ना उठे उसको काम करना पड़े, वह भी पैसे के लिए। अब पुत्र रोता हुआ अपनी मां से मिला। मां पुत्र का रोता चेहरा देख उसको अपनी संदूक से कुछ पैसे दिए। शाम होने पर उसने वह पैसे व्यापारी को दे दिए। व्यापारी ने उसे कहा कि जाओ इसे कुएं में फेंक दो। पुत्र ने वैसा ही किया। व्यापारी चालाक था, वह समझ गया और अगले दिन व्यापारी ने मां को मना कर दिया कि पुत्र को पैसे न दें। अगले दिन व्यापारी ने वही बात दोहराई। पुत्र वापस मां के पास गया परंतु बेबस मां कुछ ना कर सकी। अब पुत्र निराश हो गया और कुछ देर घूमकर वह मंदिर में जा बैठा। उसे नींद आ गई। जब नींद खुली तो शाम होने को थी। अब उसने सोचा कि कुछ ना कुछ तो करना होगा वरना भोजन तो गया समझो ! वह बाजार की तरफ चला। उसे रास्ते में एक सेठ मिला। उसके पास कुछ सामान था। उसने पूछा कि सामान को पहुंचाने के लिए वह कुछ मदद कर सकता है? सेठ ने हामी भर दी। सामान भारी था और घर दूर था। चलते-चलते उसके पैर लड़खड़ाने लगे और कंधे दर्द करने लगे। सामान पहुँचाने पर उसे ₹1 मिला। शाम हुई, वह पैसे लेकर व्यापारी के पास गया। व्यापारी ने कहा कि जाओ इसे कुएं में फेंक दो परंतु आज वह नहीं गया। बस सर झुकाए खड़ा रहा। व्यापारी समझ गया कि आज उसका पुत्र पैसे कमाकर लाया है क्योंकि मेहनत से कमाया हुआ पैसा हमारे लिए बहुत प्रिय होता है। व्यापारी ने पुत्र को समझाया कि हमें पैसे की कद्र करनी चाहिए और इसका सम्मान करना चाहिए। तब से व्यापारी का पुत्र उसका व्यापार समझदारी से चलाने लगा और उसका विस्तार करने लगा |

आस्तिक शर्मा
9वीं 'अ'
पी एम श्री केंद्रीय विद्यालय नामकुम रांची

22. बस चलते ही जाना है

बस चलते ही जाना है”
मंजिल को पाना है तो,
बस चलते ही जाना है,
चलते ही जाना है।
माना, कि रास्ता थोड़ा
कठिन है,
लेकिन नामुमकिन नहीं।
जब ठान लिया है मन में,
तो बस कर दिखाना है।
सारी कठिनाइयों को पार
कर, अपना मुकाम हासिल
करना है।
जिन्होंने कहा है तुझसे
नहीं होगा,
उनको भी करके दिखाना
है।
सोने की तरह घिस कर,
बस चमकते ही जाना है,
चलते ही जाना है,चलते
ही जाना है।।
निरंतर मेहनत कभी बेकार
नहीं जाता,
कभी न कभी वो तुझे
सफल जरूर बनाता
जितना बड़ा तुम्हारा
मेहनत होगा,
उतना ही बड़ा तुम्हारा
पहचान भी होगा।
माना मंजिल अभी दूर है,
मगर संघर्ष अभी जारी है।
जिस दिन तुझे सफलता
मिलेगी,
उस दिन चारों तरफ शोर
ही शोर होगा।।

संगीता दत्ता
कक्षा - 11 (अ)
केन्द्रीय विद्यालय न.-1 धनबाद

23. तितली

अगर मैं होती एक तितली,
रंग - बिरंगी, प्यारी तितली।
फूल - फूल पर मैं मंडराती,
मीठा रस हर दिन पी जाती।
नीले अंबर में उड़ती जाती,
सबको अपनी छटा दिखाती।
बाग - बगीचे महक उठते,
जब मैं अपने पंख फैलाती।
सखियों संग खेलती - गाती,
नई - नई दुनिया देख आती।
बच्चे मुझको देख मुस्कुराते,
पकड़ने को पीछे दौड़ लगाते।
न चिंता होती, न कोई डर,
उड़ती रहती इधर - उधर।
अगर मैं होती एक तितली,
खुशियाँ बाँटती घर - घर।

अयान आलम
कक्षा – 5वीं अ
पीएम श्री
केंद्रीय विद्यालय भुरकुंडा

24. सच्ची पढ़ाई

दो मित्र थे - श्याम और रामू। दोनों दसवीं की परीक्षा की तैयारी कर रहे थे। दोनों एक ही शिक्षक और एक ही पुस्तक से पढ़ते थे । दोनों ने एक साथ परीक्षा दी । जब परिणाम आया तो श्याम का 94 प्रतिशत अंक आए जबकि रामू का 96 प्रतिशत आया। दोनों से पूछने पर पता चला कि रामू 3 घंटे पढ़ता है और श्याम 5 घंटे पढ़ता है। सभी आश्चर्यचकित हो गए। श्याम और रामू को भी कुछ समझ नहीं आया। वे दोनों अपने शिक्षक के पास गए , जिन्होंने उन्हें परीक्षा के लिए पढ़ाया एवं तैयार किया था। शिक्षक को जैसे ही यह सब पता चला, उन्होंने अपने शिष्यों को गले लगा लिया और बधाई देते हुए कारण बताने के लिए एक दिन का समय माँगा । शिक्षक ने सोचा और .... ..सोचा और अंत में उन्होंने दोनों की पढ़ाई वाले समय को देखकर पता लगा ही लिया। सभी उत्तर जानने के लिए उत्सुक थे। शिक्षक ने जो कहा उसे सुनकर सबकी जिज्ञासा शांत हो गयी । शिक्षक ने कहा कि श्याम 5 घंटे पढ़ता था फिर भी उसके 94 प्रतिशत ही अंक इसलिए आए क्योंकि वह मन लगाकर नहीं पढ़ता होगा और पढाई के समय इधर-उधर की बातें सोचता होगा। रामू 3 घंटे ही पढ़ता था फिर भी उसके 96 प्रतिशत अंक इसलिए आए क्योंकि वह मन लगाकर पढ़ता होगा और पढ़ने के समय सिर्फ पढ़ाई ही करता होगा । रामू की पढ़ाई ' सच्ची पढ़ाई ' थी ।

याद रखें, अपनी मंजिल को पाना है तो हमें सच्ची पढ़ाई करनी चाहिए ।

आरुषी कुमारी सिन्हा
कक्षा -9वीं'अ'
पी एम श्री केंद्रीय विद्यालय नामकुम रांची

2

25. सपनों की उड़ान

सपनों की उड़ान
छोटे-छोटे सपनों को,
दिल में मैंने पाला है।
मेहनत की इन राहों पर,
हर कदम संभाला है।
आँधी आए, वर्षा बरसे,
हिम्मत फिर भी हारूँ ना।
सूरज बनकर एक दिवस,
अपने पथ से टालूँ ना।
ज्ञान बने मेरा साथी,
सच्चाई मेरी पहचान।
अपने कर्मों से जग में,
छोड़ूँ मैं एक नया निशान।
आसमान की ऊँचाई से,
बड़ा हो मेरा सम्मान।
देश और परिवार का,
बनूँ सदा मैं अभिमान।

आराध्या कुमारी
कक्षा – 5वीं अ
केंद्रीय विद्यालय भुरकुंडा

26. जल की पुकार

बूँद-बूँद में जीवन बसता,
जल से हर आँगन हँसता।
नदियाँ गाएँ मधुर तराने,
धरती ओढ़े हरियाली के गहने।
जल है खेतों की मुस्कान,
जल से महके हिन्दुस्तान।
प्यासे होंठों का है सहारा,
जीवन का यह सच्चा तारा।
मत बहने दो इसे व्यर्थ,
जल से ही है धरती समर्थ।
आज बचाओ हर इक बूँद,
कल खिलेगी खुशियों की धूप।
आओ मिलकर लें यह ठान,
जल बचाना है अभियान।
हर बूँद का सम्मान करेंगे,
उज्ज्वल भारत का निर्माण करेंगे।

<u>नारा:</u>

"जल बचेगा, कल सजेगा,
हर बूँद में भविष्य बसेगा।"

रिद्धी
कक्षा – 11वीं अ
केन्द्रीय विद्यालय गढ़वा

27. क्या नारी शक्ति है?

बेटी
माँ !क्या सच में नारी शक्ति है?
क्यों लोगों की नजरों में खोट दिखती है?
क्यों हमेशा यह शोर है?
क्या नारी आज भी कमजोर है?
कभी मैं सोचते-सोचते रह जाती हूँ,
मन में लिए कई सवाल ,
पर किसी से कह नहीं पाती हूँ।
समाज बदला है ,कैसे हम कह दें?
जब हम सुरक्षित ही नहीं रास्तों में!
उम्र से पहले कुछ कर लूँ तो बड़ी बात है,
पीछे खींचने को तैयार पहले ही बहुत हाथ हैं।
सच्चाई कहूँ ?पर यह तो नियम है नर जीवन का",
बुरी नजरों से बचाव और संभालो अपना पहनावा।
" उन्होंने तो बस आवाज उठाई थी,
आज शांत हैं ,पर सबकी आवाज बन गई!
उन्होंने तो बस सच्चाई बताने की कोशिश की,
पर उनकी चाहत हैवानियत का शिकार बन गई।
शक्ति तो थी उनमें लड़ने की,
इसलिए खुद को कुर्बान कर यहाँ की सच्चाई बता गईं।
सच !सच यह है कि चंद दिनों में लगेगा कुछ हुआ ही नहीं,
अमृत इंसानियत ने हमारी रूह को छुआ ही नहीं।
माँ:
बेटी !तेरे हर सवाल का आज मैं जवाब देती हूँ,
नारी की ही शक्ति बनकर बुराइयों का हिसाब लेती हूँ।
तू गलत के खिलाफ आवाज उठा,
कोई गलत करे तो हाथ उठा।
ना कर तू किसी का इंतजार,
खुद की रक्षा करने को है तुझमें शक्ति बेशुमार।
लोग तो बस कहेंगे ,तुझे कर दिखाना है,
बस खुद पर रख विश्वास,
सदैव अपने शीश को गर्व से ऊंचा रखना है तुझे।
मानव जीवन में परेशानियां हैं,
लोगों की नियत में बेईमानियां हैं,
पर तू खुद पर रख विश्वास।
हो बुलंद कर मेहनत जब तक फेफड़ों में श्वास!

स्नेहा कुमारी
बारहवीं विज्ञान
के वि मैथन डैम

28. हे विशाल ह्रदय! हे पिता!

जीवन के संघर्षों को,
मुस्कान बनाना सिखलाया।
विषम राह में अविचल रहकर,
हर कदम बढ़ाना सिखलाया।
खुद की तकलीफों को छिपाकर,
पर-दुःख हरना सिखलाया।
निज पीड़ा को मौन रखकर,
जग को हँसाना सिखलाया।
अपने घावों की पीड़ा को,
कब तुमने मुख पर आने दिया?
मन में चाहे दर्द रहा हो,
सबको तुमने स्नेह दिया।
प्रतिशोध नहीं, क्षमा चुनना,
क्रोध नहीं, करुणा सिखलाई।
मन में कोई बैर न रखना,
मानवता की राह दिखलाई।
आलस्य का त्याग सदा कर,
नित कर्मण्य रहना सिखलाया।
भाग्य स्वयं ही बदल सके जो,
ऐसा श्रम करना सिखलाया।
सूरज से पहले जगकर तुमने,
कर्म की महिमा समझाई।
थके कदम पर रुके नहीं तुम,
जीवन की यह रीति सिखलाई।
गिरकर फिर से उठना सीखा,
हार में भी साहस पाया।
कठिन समय में धैर्य न खोना,
तुमने मुझको यह सिखलाया।

सत्य भले ही कठिन डगर हो,
उस पर अडिग रहना सिखलाया।
स्वाभिमान से शीश उठाना,
पर अभिमान से बचना सिखलाया।
ऊँचा होकर विनम्र रहना,
फल से लदे वृक्ष-सा झुकना।
अपनी सामर्थ्य के अनुसार,
हर निर्बल का संबल बनना।
तुमने केवल शब्द न बोले,
जीकर हर आदर्श दिखाया।
उपदेशों से कहीं अधिक,
कर्मों ने मुझको समझाया।
हे विशाल ह्रदय! हे पिता!
तुमसे जीवन-दृष्टि पाई।
मानव होकर मानवता की,
सच्ची राह तुमने दिखलाई।
हे विशाल ह्रदय! हे पिता!
नर जीवन में,
स्वकर्मों से,
नरोत्तम बनना सिखलाया।
आशीष मिले,
जो भी सीखा;
निज जीवन में उतार सकूँ।
हे विशाल ह्रदय! हे पिता!
तेरा कद और विशाल करूँ!
हे विशाल ह्रदय! हे पिता!
तेरा कद और विशाल करूँ!

कुमार बालशिव
प्राथमिक शिक्षक
पी एम श्री केंद्रीय विद्यालय सी. सु. ब.
हजारीबाग

29. माँ तुझसे हरदम कहता हूँ

माँ तुझसे हरदम कहता हूँ
तू इतना न घबराया कर
मेरी तकलीफों के खातिर
ख़ुद को न रुलाया कर
माँ जब भी तू मुस्काती है
चेहरे पे चमक छा जाती है
देख तुझे मायूस ओ माँ!
आँखों में नमी आ जाती है
जो राह चुनी है मैंने
वो राह कठिन है माना माँ
इस पर चलकर ही मैंने
ख़ुद को है पहचाना माँ
कोशिश कर करके मैं भी
एक दिन आगे बढ़ जाऊँगा
दुनियां की सारी खुशियों को
तेरे कदमों तले बिछाऊँगा
तू तो मेरा जज़्बा है
तू ही तो अभिमान है माँ
भूल चुका हूँ इस दुनिया को
बस तुझसे ही पहचान है माँ
तेरे दिल का टुकड़ा हूँ
तेरी आँखों का नूर हूँ माँ
रास न आती दूरी तुझसे
बस थोड़ा सा मजबूर हूँ माँ

नरेंद्र जयसवाल (पीआरटी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय सिमडेगा

30. जो आप देख पाते

बस एक बार मेरी तरफ देखिए
सुनिए
पता है की थकान है
पता है कि काम बहुत
पता है कि वक्त नहीं
पर सोचती हूं ऐसे ही मैं
काश आप भी सोचते कि मैं क्या सोचती हूं
एक घर ,एक छत, एक कमरा
दिख रहे आप बैठे उस पार मेज़ के ,
पर यह मेज़ लगती क्यों सालों के विस्तार सी,
विस्तार हमारे बीच की चुप्पी का।
नहीं आई मैं कुछ मांगने आपसे
ना ही पैसे
ना कोई तारीफ
ना ही कोई इनाम
बस इंतजार है नजरों के मिलने का,
मिलकर मुझसे कहने का—"तेरा होना काफी है"
जैसी है,जो भी है।
नहीं समझ थी जबसे मुझको ,
देख रही मै तबसे आपको
दफ्तर से आते और जाते
रोज़ थकान अपनी छुपाते।
तो कैसे थकान मैं अपनी बात बतापाति आपको,
डर लगता है ,कैसे समझाती आपको?
दरवाज़े तक आपके पहुंचती थी मैं
आप तक ना पहुंच पा,सर नोचती थी मैं
हर उड़ान पर मेरी,कहना था आपका—
"जमीन पर रहा करो"
मांगा जब मैंने भरोसा ज़रा आपका,
कहने लगे आप—"पहले खुदको साबित तो करो"
साबित करती गिरती पड़ती ,
खुद उठती ,खुद संभालती,
आस थी मुझे उस हाथ की,
जो बढ़ा न मेरी ओर कभी।

कर्ज़ है मुझपर आपके प्यार का,
बचपन में मुझे सुधारने को पड़ी हर उस मार का,
कर्ज़ है रोटी,छत,किताबों का,
चुका दूंगी मैं यह प्यार नाम का कर्ज आपका,
पर डर जाती हूं फिर मैं,
की कर्ज़ चुकाने से पहले आप मेरी काबिलियत न माप लो,
साबित नहीं कर पाई खुदको,
तो मेरा अस्तित्व न आंक दो।
देखा है मैंने,गिरती मैं जब भी
आवाज़ एक आती—"उठ और चल तुझमें हिम्मत है अब भी!"
नहीं,नहीं आवाज़ नहीं वो आपकी,
रास्ता दिखाता वो हाथ था न आपका पर,मेरा।
खुदपर यकीन है मुझको बहुत,
आपने ना ही दिया, न किया,कमाया है मैंने,
वो हाथ जो न बढ़ाया आपने मेरी ओर,
मैने खुदका हाथ थामना सीख लिया।
मुझे पता है आपको डर लगता है ऊंचाइयों से,
आखिर वहां से गिरे हो आप भी कई बार,
इसीलिए डरते हो,मेरे उस ऊंचाई को चुने से,
पहले खुदको ज़मीन पे रहना सिखाया और अब,मुझे।
चल कर तो देखो एक बार मेरे संग
क्या फर्क पड़ता है अगर मेरे मोम के पंख पिघल भी जाए,
उड़ते वक्त उस चमकते सूरज के करीब,
मुझे तब भी सूरज को छूने का गुरूर रहेगा।
तो थाम लो एक बार हाथ मेरा आप भी,
ऊंचाई पर हवा अलग सी होती है ,
सुकून होता है, जुनून होता है,
तो डरना मत क्योंकि मैं आपका हाथ नहीं छोड़ने वाली।
ढूंढ रही एक लम्हा न जाने मैं कबसे,
जब कह रहे होगे आप मुझसे—"गर्व हो बेटी तुम मेरा, हाँ, मुझे नाज है तुझपे।"
लम्हा मिला नहीं जो मुझको,
ढूंढ रही मैं अब भी उसको।
पता है मुझे बहुत सहा है आपने ,
अपने पिता से भी बहुत सुना है आपने,
पर जो ज़ख्म मिले थे आपको,
क्या उनका हकदार बनाना जरूरी था मुझको?
आप तो सब मेरे लिए कर रहे थे ना?
तो फिर क्यों रह गई यह दूरी?

माना खुदको खुदा अपना मैंने,
क्योंकि हर दर्द मेरी जंग का स्वयं ही सहा मैंने,
लहरों से आगे जो नजर देख पाती,
तो आप जान लेते मै क्या सोचती हूं।
न होता डर अगर उस खामोशी का,
डर न होता खारिज होने का अगर,
कर लेते थोड़ा भरोसा मुझपे
तो मैं भी दौर आपके पास आती,
आंखों में आंखे डाल बोल पति—
"देखो ,मैने कर दिखाया,बस आपके लिए।"
खुशी न रह जाती आधी मेरी उसपे।
मेरी बात मानो मैं आपसे नाराज़ नहीं,
नाराज़गी उम्मीद के खत्म होने पर आती है
मेरा उम्मीद का दिया आज भी उज्वल है।
वो बच्ची आज भी मुस्कुराते हुए खिड़की से झांकती है,
सोचती है—"आज तो वो आएंगे,मुझे देखेंगे,मेरी पीठ थपथपाएंगे" ,और कहेंगे—"हाँ,मुझे गर्व है।"
भले ही लौटती खाली हाथ हर बार वो बच्ची,
फिर भी उड़ती है वो,हमेशा रहेगी।
इसीलिए नहीं कि ये आप चाहते हो ,
पर क्योंकि उस बच्ची ने खुद से कहा था—"तू काबिल है।"
वो बच्ची खुदपे भरोसा करती तो बहुत है,
पर फिर भी एक टीस रह जाती है,
एक काश—
जो हमेशा उसके सपनों में आता है,
काश आप होते,
काश आप देखते,
काश आप सुनते,
मांग रही मैं हाथ आपका, माना डर है आपको ऊंचाई का,
पर मेरे यकीन का भी तो सोचो ज़रा ,
टकराएगी जब हवा चेहरे से आपके,
भूल जाओगे आप डरते भी थे,
मुस्कुराओगे नीचे देख आप भी मेरी तरफ,
होगी चमक आपकी आंखों में भी,
वो चमक,वो चमक होगी कामयाबी मेरी।
और उस दिन,उस दिन आपका डर खत्म हो जाएगा।
वादा है।
इतनी सी बात है।
इतनी सी चाह है।
मेरी तरह अगर खुदपे होता भरोसा ज़रा,
तो कुछ दूर आप भी साथ आते।

संचित कुमारी
केंद्रीय विद्यालय मैथन डैम
कक्षा- XII 'A'

31. वसंत ऋतु

वसंत ऋतु मुस्काती आई,
संग खुशियों की सौगात लाई।
रंग-बिरंगे फूल खिले हैं,
धरती ने हरियाली ओढ़ी है।
कोयल की मीठी तान गूँजे,
भँवरे मधुर गीत सुनाते हैं।
रंग-बिरंगी तितलियाँ आकर,
फूलों पर नृत्य दिखाती हैं।
नव-पल्लव से सजे हैं उपवन,
हर डाली नव जीवन गाती है।
शीत ऋतु की विदाई होकर,
प्रकृति नई उमंग जगाती है।
वसंत हमें संदेश सुनाता,
हर अँधेरे के बाद सवेरा आता।
प्रेम, स्नेह और आशा बाँटो,
जीवन को सुंदर बनाता।
प्रकृति का सम्मान करें हम,
हरियाली का मान बढ़ाएँ।
वसंत की इस सुंदर बेला में,
मिलकर खुशियों के फूल खिलाएँ।

अक्षिता राउत राय
कक्षा 8वी 'अ'
के वि मेघाहातुबुरू

हमसे संपर्क करें...

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

क्षेत्रीय कार्यालय

के. वि. नामकुम परिसर, राँची

पिन - 834010, झारखंड

वेबसाइट – https://roranchi.kvs.gov.in

ई-मेल :- dcroranchi@gmail.com

फ़ोन नंबर :- 09264436970 (उपायुक्त), 9102992109 (सहायक आयुक्त), 9102992107(प्रसाशनिक अधिकारी), 9102992108 (वित्त अधिकारी)

राज्य :- झारखंड

संसदीय क्षेत्र :- राँची

*"हिंदी केवल राजभाषा नहीं, बल्कि भारत की आत्मा को व्यक्त करने का माध्यम है।
यह भाषा हमारी परंपरा, संस्कृति और राष्ट्रीय चेतना को जीवंत बनाए रखती है।"*

-डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केंद्रीय विद्यालय संगठन राँची संभाग

KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN RANCHI REGION